Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

दीन बन्धु सर छोटूराम

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 24 अंक 11 30 नवम्बर, 2024 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

किसान मसीहा दीन बन्धु चौ0 छोटू राम

24 नवम्बर, 143वें जन्म दिवस पर विशेष

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

किसानों, मजदूरों एवं ग्रामीण समाज के मसीहा दीन बन्धु चौ० छोटू राम का जन्म 24 नवम्बर 1881 को रोहतक (हरियाणा) के छोटे से गांव गढ़ी सांपला में एक गरीब किसान सुखीराम के घर में हुआ। अपनी बौद्धिक कुशलता के बलबूते पर सेंट स्टीफन कालेज दिल्ली से स्नातक की डिग्री हासिल करना और सम्पूर्ण विद्यार्थी जीवन में वजीफे द्वारा कानून में स्नातक तक की डिग्री प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करना उनकी उच्च स्तरीय बुद्धिमता को प्रमाणित करता है। दीन बंधु की जीवन शैली इस कथन को "**होनहार वीरवान के होत चिकने पात**" पूर्णतयाः सिद्ध करती है। अपने छात्रपन के बाल्य काल में आठवीं–नौवीं कक्षा के दौरान अपने पिता जी को एक साहूकार के विश्रामकक्ष में रस्सी से कपड़े के पंखे से हवा करते हुये देखकर काफी हताश हो गये और उसी समय अपने पिता जी को बाजू से पकड़कर घर ले आये, यही नहीं साहूकार को लताड़ लगाकर कहा कि आपको अपने पिता समान व्यक्ति से हवा करवाने में शर्म आनी चाहिए। वे उर्दू के मशहूर शायर डॉ. सर मोहम्मद इकबाल की कविताओं के सदैव कायल रहे व उनके इन शब्दों : "**खुदी को कर बुलंद इतना, कि हर तकदीर से पहले खुदा बंदे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है**" पर न केवल सदैव अमल करते, बल्कि तमाम सार्वजनिक सभाओं में सर्वप्रथम समस्त किसान समाज व युवाओं को इन ओजस्वी/प्रेरणादायक शब्दों से प्रोत्साहित करते थे।

चौ0 साहब की धर्मनिरपेक्षता व राष्ट्रवादी पार्टी सदैव राष्ट्र विरोधी तत्वों को समाप्त करने का प्रयास करती रही। वे हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधार रहे हैं। जब मुस्लिम लीग पंजाब में युनियननिष्ट पार्टी को खत्म करने का प्रयास कर रही थी और देश विरोधी तत्वों द्वारा मजहब के नाम पर देश को बांटने की कोशिश की जा रही थी उस समय 1944 में चौ0 छोटूराम ने मुस्लिम बाहुल क्षेत्र लायलपुर में एक विशाल रैली आयोजित की जिसमें डिप्टी कमीशनर व मुस्लमान मुल्लाओं के विरोध के बावजूद भी पचास हजार लोगों ने भाग लिया और राष्ट्र विरोधी ताकतों के इरादों को नकार दिया उन्होंने 15 अगस्त 1944 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को पत्र लिखकर मोहम्मद अली जिन्हा के कट्टर पंथी इरादों से अवगत कराया। इसी प्रकार 24 नवम्बर 1944 को विशाल जनसभा के दौरान किसान राज और विशाल भारत की कल्पना पर लगातार 2 घंटें तक किसान–काश्तकार को उनकी ताकत का अहसास कराकर हिन्दू, सिक्ख, ईसाई, मुसलमान को आपसी सामाजिक भाईचारे व एकता के लिये प्रेरित किया। लेकिन अफसोस है कि चौ0 साहब ज्यादा समय तक इन ताकतों का सामना करने के लिए जीवित नहीं राष्ट्र विरोधी ताकतें अलग इस्लामिक राज्य–पाकिस्तान का गठन कराने में सफल हो गई। अगर चौ0 साहब जिन्दा होते तो देश का बटवांरा न हो पाता। चौ0 साहब बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहते थे "**हम मौत पसन्द करते हैं, विभाजन नहीं**"।

देश को साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार एवं भाई–भतीजावाद जैसी कुरीतियों से बचाने तथा करोड़ों किसानों व मजदूरों को आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने हेतू उन्होने अपने वकालत के पेशे को ठुकरा कर सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया और वर्ष 1916 में रोहतक जिले के कांग्रेस अध्यक्ष चुने गये, लेकिन मात्र चार वर्ष बाद कलकता अधिवेशन के अन्दर वर्ष 1920 में ही कांग्रेस द्वारा चलाये गये असहयोग आंदोलन से अपनी असहमति जताते हुए कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया। अतः वर्ष 1923 में सर फजेल हुसैन के साथ मिलकर किसान, मजदूर व छोटे काश्तकारों के कल्याण को सर्वोपरि रखते हुए नैशनल यूनियननिष्ट पार्टी का गठन किया। यह पार्टी धर्म निरपेक्षता के आधार पर गठित की गई। वर्ष 1923 में पंजाब में विधान सभा चुनाव जीतने के बाद दीन बन्धु सर छोटू राम कृषि मंत्री बने और 26 दिसम्बर 1926 तक मंत्री रहे। इस थोड़े से समय में ही उन्होने जनहित में अनेकों

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

कार्य किये जिनमें किसानों को साहूकारों व सूदखोरों के प्रभाव से मुक्ति दिलाने के लिए कई लाभकारी कानून पारित करवाये गये जैसा कि 'पंजाब कर्जा रहित अधिनियम 1934' जिसके अनुसार अगर किसी काश्तकार ने कर्ज ली गई राशी को दोगुना या अधिक का भुगतान कर दिया है तो उसको कर्ज की राशी से स्वतः मुक्ति मिल जायेगी।

'पंजाब कर्जदार सुरक्षा अधिनियम 1936' जिसके अनुसार पूर्व मालिक के कर्ज के लिए उसके वारिस की जमीन के हस्तांतरण पर रोक लगी और खड़ी फसल व वृक्षों को बेचने व कुर्की करने पर रोक लगी। इसी प्रकार 'पंजाब राजस्व कानून 1928', 'पंजाब कर्जदाता पंजीकरण अधिनियम 1938' व 'रहनशुदा जमीनों की बहाली का अधिनियम 1938' भी पारित किये गये। इन विधेयकों का प्रभावशाली क्रियान्वयन कर्जा पीड़ित किसानों के लिए वरदान साबित हुआ जिनके तहत किसान के मूलभूत कृषि यंत्र व साधन– हल, बैल आदि की किसी भी अवस्था में कुर्की नहीं की जा सकती। राष्ट्रीय योजनाओं में भाखड़ा नग्गल डैम की प्रस्तावना का स्वरूप और उसका क्रियान्वयन चौ० छोटूराम की सबसे बड़ी देन है। उन्होने इस योजना के निर्माण के लिए मार्च 1933 में पंजाब लेजीस्लेटिव कांउसिल में प्रस्ताव पास करवाकर इस परियोजना के क्रियान्वयन के लिए काफी बाधाओं के बावजूद अन्तिम समय तक निरन्तर प्रयास जारी रखे और अन्त में 8 जनवरी 1945 को लम्बे संघर्ष के बाद बिस्तर से ही इस परियोजना को लागू करने के आदेश करने में सफल हुए। इसके बाद चौ० साहब काफी प्रसन्न हुए और कहने लगे कि आज मैनें अपनी सबसे प्यारी योजना भाखड़ा डैम योजना पूरी करने के लिए हस्ताक्षर कर दिये हैं ।

दीनबन्धु चौ० छोटू राम हमेशा नौजवानों को प्रोत्साहन देने के लिए हमेशा डा० सर मोहम्मद इकबाल के निम्न शब्दों को सार्वजनिक तौर से अत्यन्त स्नेह व आदर सहित दुहराते थेः–

यकीने मोहक्कम अम्ले पयहम मोहब्बत आलम
जेहादे जिन्दगानी में है मर्दो की शमशीरे।

अर्थात तुरन्त पहल, पक्का इरादा व आपसी भाईचार ही मर्दो की ढ़ाल है। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि उन दिनों कृषक व ग्रामीण समाज में बढ़ती हुई भुखमरी व बेरोजगारी को दूर करने के लिए सर छोटू राम ने अहम् भूमिका निभाई। इसलिए उन्होने रोहतक जिले में बेरोजगारी व अशिक्षा को दूर करने के लिए किसान मजदूरों के बच्चों को कांग्रेस की नीति के विरोध में सेना में भर्ती होने के लिए प्रेरित किया, जिसको महिलाओं ने भी उन दिनों एक गीत के रूप में गाना शुरू कर दिया :– भरती हो जा रे रंगरूट, यहां मिले टूटे जूते, वहां मिलेगें बूट। यही एक मात्र कारण है कि आज रोहतक जिले के अधिकारी सेना प्रमुख भी रह चुके हैं और दो दर्जन से अधिक मेजर व लेफ्टीनैन्ट जरनल के पदों पर तैनात हैं।

आज देश की आंतरिक व बाहरी सुरक्षा के उपर गम्भीर संकट के बादलों को मंडराते देख तथा राजनेताओं के खोखले बयानबाजी व पड़ौसी देश पाकिस्तान व चीन की निरन्तर धमकियों को मध्यनजर रखते हुए लेखक को दीन बन्धु के निम्न सार्वजनिक कथन बार–बार याद आ रहे हैंः–

"जंग में काम आती हैं न तदबीरें, न शमशीरें,
गर हो यकीन जो पैदा तो कट जाती हैं जंजीरें"

वर्ष 1942 में विश्व युद्ध के दौरान देश में अन्न की कमी बताकर अंग्रेजी सरकार किसान से 6 रुपये प्रति मण गेहूं खरीदना चाहती थी लेकिन चौ० छोटूराम ने बतौर कृषि मंत्री किसान का पक्ष लेकर 10 रुपये प्रति मण गेहूं की कीमत की मांग की थी। इस पर सरकार ने मुख्यमंत्री सर सिकंदर हयात खान से कहकर चौ० छोटूराम पर दबाव बनाने का प्रयास किया, लेकिन मुख्यमंत्री ने स्पष्ट मना कर दिया कि पंजाब का समस्त किसान चौ० साहब के आहवान पर फसल में आग लगा सकता है लेकिन उनके द्वारा मांगे गये भाव से कम कीमत पर फसल नहीं बेचेगा। चौ० साहब के कठोर व दृढ़ निश्चय को भापकर ब्रिट्रिश सरकार ने 11 रुपये प्रति मन के हिसाब से गेहूं का मूल्य घोषित करना पड़ा था। लेकिन आज किसान को फसल औने पौने दामों पर कोड़ियों के भाव खरीदी जा रही है और इस साल खरीफ के सीजन में बहुत सी मंड़ियों में तो धान, बाजरा आदि फसलों की खरीद ही नहीं की गई। आज चौ० छोटूराम व चौ० देवीलाल जैसा किसान–काश्तकार वर्ग की अगुवाई करने वाला कोई भी एक छत्र किसान नेता नहीं है। जिस कारण यह वर्ग सरकार की किसान विरोधी नीतियों के कारण लगातार पिछड़ रहा है और सरकार अभी तक किसानी उपज की जीवन रेखा न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) तय नही कर सकी। इसलिये आजादी के 77 वर्ष बाद भी किसान की हालत सुधरने की बजाये उनकी समस्याएं दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही हैं और आने वाले दिनों में किसान भीख मांगने पर मजबूर हो जायेगा। एक अनुमान के अनुसार विगत 10 वर्षो के अन्दर 70000 से अधिक किसान खुदकुशी कर चुके हैं। गत वर्षों में सरकार द्वारा लाये गये किसान विरोधी तीन कृषि बिलों के विरोध में लम्बे समय तक चले आंदोलन में 800 से अधिक किसान जान गवां बैठे।

चौ० छोटूराम कृषक समाज के एक क्रांति दूत बनकर उभरे। वे हमेशा कहते थे ''नहीं चाहिए मुझे ये मखमल के

मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।'' चौ० छोटूराम सदी की रक्तहीन क्रांति के सुत्रधार बने। दीन बंधु चौ० छोटू राम महिला विकास, सुरक्षा के साथ–साथ उनकी शिक्षा व सम्मान के सदैव पक्षधर रहे। वे शिक्षा के प्रसार को गांव–देहात के हालात बदलने के लिये जरूरी मानते थे, इसलिये उन्होंने ग्रामीण युवको को उच्च शिक्षा प्राप्त कर उच्च पदों व शासन में प्रमुख दायित्वों पर आसीन होने के लिये प्रेरित किया। एक बार रोहतक के पास खाप पंचायतों ने मिलकर आग्रह किया कि आपके सुपुत्र नहीं है इसलिए आप दूसरी शादी करलो तो उन्होने उनको लताड़ते हुए कहा कि जब समस्त संयुक्त पंजाब के नर–नारी, सुपुत्र–सुपुत्रियां उनकी संतान हैं, तो दूसरी शादी क्यों करवांऊ।

चौ० छोटूराम ने उद्यमकर्ताओं से आह्वान किया था कि वे सरकार से मिलकर वातावरण संरक्षण की योजना बनाएं। जनता को भी जागरूक करने हेतू उन्होने किसानों को खेत को तीन भागों में बांटने को कहा था कि एक भाग में खेती, चारों ओर वृक्ष तथा तीसरे हिस्से में पशुपालन रखने से वातावरण का संरक्षण भी होगा तथा पोषित विकास संभव होगा। आज वैज्ञानिकों को इसकी सुध आई है। समय रहते उचित पग उठाए होते तो आज ओजोन लेयर को क्षति नहीं पहुंचती और इंसान भंयकर बीमारियों से बचा रहता।

आज किसान की दूर्दशा और बर्बादी को रोकने के लिये सुखे, बाढ़, बीमारी के बचाव हेतू चौ० छोटू राम द्वारा स्थापित किसान कोश की तर्ज पर केन्द्र सरकार द्वारा किसान राष्ट्रीय सुरक्षा कोष स्थापित करने की आवश्यकता है। इस कोष से किसान–मजदूर और मजलूम को हर संभव मुश्किल झेलने में मदद देने के प्रावधान किए जाएं। लेखक जाट सभा के प्रधान के तौर पर भाखड़ा नंगल डैम पर दीन बन्धु चौ० छोटू राम की प्रतिमा स्थापित करने तथा पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में उनके नाम से चेयर स्थापित करने के लिये कई बार भारत सरकार तथा यूनिवसिर्टी ग्रॉट कमीशन को पत्र लिखकर आग्रह कर चुके है। लोकप्रिय नेता व पूर्व केंद्रीय मंत्री स्व० श्री रतन लाल कटारिया ने भी यह मुद्दा बार–बार संसद में उठाया था लेकिन अफसोस का विशय है कि भाखड़ा नंगल डैम पर बनाये गये आर्ट गैलरी कक्ष में दीनबंधु चौ० छोटूराम किसी ग्रुप फोटो में भी नहीं है। चेयर स्थापित करने के लिये पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा 5 करोड़ का खर्च बताया गया है जोकि एक संस्था के लिये नामुकिन है लेकिन सरकार व यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन के लिये यह कोई मुश्किल कार्य नहीं है। दीन बन्धु की यादगार में ये प्रशसनीय कार्य करने से ही उनको सच्ची श्रद्धाजंली दी जा सकती है। सितंबर, 2021 में महामहिम उपराष्ट्रपति द्वारा दीनबंधु चौ. छोटू राम की जीवनी पर हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति अकादमी कुरूक्षेत्र द्वारा प्रकाशित सर छोटूराम राइटिंग्स एंड स्पीचिज 5 खण्डों का विमोचन किया गया है जोकि इस महापुरूष के सम्मान के लिये साहसिक कदम है।

इसके साथ ही किसान के हित में राष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाने हेतू किसान सुरक्षा संगठन की स्थापना की जानी चाहिए। आज कृषक–मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, इनके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतिशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसत्ता सम्पन्नता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीन बंधु चौ० छोटूराम की आवश्यकता है ताकि ग्रामीण समाज, किसान, कृषक–मजदूर वर्ग के विकास का उनका स्वपन्न साकार हो सके।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

रूस्तम-ए-हिंद व हिन्द केसरी चौ. दारा सिंह रंधावा

– जयपाल सिंह पूनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

चौ. दारा सिंह का जन्म 19 नवंबर, 1928 में पंजाब के अमृतसर जिला के धरमूचक गांव के किसान/जाट परिवार में हुआ था। इनके पिता जी का नाम श्री सूरत सिंह रंधावा और माता जी का नाम श्रीमति बलवंत कौर था। इनका एक भाई था जिनका नाम श्री सरदार सिंह रंधावा था। इनका बचपन का नाम दीदार सिंह था। इनका विवाह श्रीमति सुरजीत कौर से हुआ था। इससे पहले इनका विवाह श्रीमति बचनो कौर से हुआ था। दोनों पत्नियों से इनके 7 बच्चे थे। जिनमें बड़ा बेटा प्रदुमन सिंह रंधावा मेरठ में रहते हैं और छोटा बेटा बिन्दू दारा सिंह बंबई में रहता है।

चौ. दारा सिंह रंधावा जी अपने जमाने के विश्व कुश्ती चैंपियन रहे हैं। उन्होंने 500 कुश्तियां लड़ी और कभी नहीं

हारे। सन् 1959 में पूर्व विश्व कुश्ती चैंपियन जार्ज गारडियान्का को हराकर कामनवैल्थ की चैंपियनशिप जीती थी। 1968में अमेरिका के विश्व चैंपियन लाऊथेज को हराकर फ्रीस्टाईल कुश्ती के विश्व चैंपियन बने। उन्होंने 55 वर्ष की आयु तक पहलवानी की और 500 मुकाबलों में किसी एक में भी पराजय का मुंह नहीं देखा। 1983 में उन्होंने अपने जीवन का अंतिम मुकाबला जीतने के बाद कुश्ती से सम्मानपूर्वक सन्यास ले लिया था। 1960 के दशक में पूरे विश्व में उनका फ्रीस्टाइल कुश्तियों में बोलबाला रहा। श्री दारा सिंह ने 1955 में 200 किलो वजनी किंग कोंग को भी हरा दिया था। 1947 में वे सिंगापुर आ गए थे। वहां रहते हुए उन्होंने भारतीय स्टाइल कुश्ती में मलेशियाई चैंपियन तरलोक सिंह को हरा कर कुवालालंपुर में मलेशियाई कुश्ती चैंपियनशिप जीती। उसके बाद उनका विजयी रथ कभी नहीं रूका और विश्व के अन्य देशों की तरफ चल पड़ा। उन्होंने पेशेवर पहलवान के रूप में अपनी धाक जमाकर वे 1952 में अपने वतन की तरफ लौट आए। भारत आकर 1954 में वे भारत में रूस्तमें हिंद और हिन्द केसरी बने। किंग कांग के बारे में कहा जाता है कि दारा सिंह ने किंग कांग की एक तरफ की मूंछ उखाड़ दी थी।

सन् 1959 में कलकत्ता कामन वैल्थ चैंपिययनशिप में कनाडा के चैंपियन जार्ज गारडियान्का एवं न्यूजीलैंड के जान डिसिल्वा को धूल चटाकर यह चैंपियनशिप भी अपने नाम की। दारा सिंह ने उन सभी देशों का एक–एक करके दौरा किया, जहां फ्रीस्टाइल कुश्ती लड़ी जाती थी। 1983 ई. में अपने जीवन का आखिरी मुकाबला जीता और भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के हाथों अपराजेय पहलवान का खिताब अपने पास बरकरार रखते हुए कुश्ती से सम्मानपूर्वक विदाई ली।

सन् 1960 के दशक में पूरे भारत और विश्व की फ्रीस्टाइल कुश्तियों में उनका बोलबाला रहा। बाद में उन्होंने अपने समय की मशहूर अदाकारा मुमताज के साथ हिंदी की स्टंट फिल्मों में प्रवेश किया। दारा सिंह ने कई फिल्मों में अभिनय के अतिरिक्त निर्देशन व लेखन भी किया। उन्हें टी.वी. धारावाहिक रामायण में हनुमान के अभिनय से अपार लोकप्रियता मिली। उन्होंने अपनी आत्मकथा मूलतः पंजाबी में लिखी थी। जो 1993 में हिंदी में प्रकाशित हुई। उन्हें अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार ने राज्य सभा का सदस्य मनोनित किया। वे अगस्त 2003 से 2009 तक राज्य सभा के सदस्य रहे।

13 सितंबर, 1998 में दिल्ली में अखिल भारतीय जाट महासभा के अधिवेशन में दारा सिंह जी को अखिल भारतीय जाट महासभा का अध्यक्ष बनाया गया था और दारा सिंह जी इस पद पर मई 2012 तक विराजमान रहे। दिल्ली के अधिवेशन में चौ. अजित सिंह, चौ. महेंद्र सिंह टिकैत, डा. साहब सिंह वर्मा, चौ. प्रियव्रत, डा. बलबीर सिंह व कैप्टन भगवान सिंह इत्यादि उपस्थित थे। चौ. दारा सिंह के मरणोपरांत कैप्टन अमरेंद्र सिंह को अखिल भारतीय जाट महासभा का अध्यक्ष चुना गया जोकि आज भी इस पद को सुशोभित कर रहे हैं।

7 जुलाई 2012 को दिल का दौरा पड़ने के बाद उन्हें कोकिला बैन धीरूभाई अंबानी अस्पताल मुंबई में भर्ती कराया गया, किन्तु सघन चिकित्सा के बावजूद कोई लाभ न होता देख चिकित्सकों ने जब हाथ खड़े कर दिये तब उनहें उनके परिवारजनों के आग्रह पर 11 जुलाई 2012 को देर रात अस्पताल से छुट्टी दे दी गई और उनके मुंबई स्थित "दारा विल्ला" निवास लाया गया। जहां उन्होंने 12 जुलाई 2012 को सुबह साढ़े सात बजे आखिरी सांस ली। जैसे ही यह समाचार प्रसारित हुआ कि "पूर्व कुश्ती चैंपियन पहलवान व अभिनेता दारा सिंह जी नहीं रहे देशवासियों के दिलों में दुख की लहर दौड़ गई और कभी किसी से संसार में हार न मानने वाला अपने समय का विश्व विजेता पहलवान आखिरकार 84 वर्ष की आयु में अपने जीवन की आखिरी सांस पूर्ण कर गया। यह सुनकर उनके प्रशंसकों व शुभचिंतकों की अपार भीड़ उनके बंगले पर जमा हो गई। उनका अंतिम संस्कार जुहू स्थित श्मशान घाट में गुरुवार की शाम को कर दिया गया।

चौ. दारा सिंह के बारे में चौंकाने वाले/रोचक तथ्य और रहस्य :–

1. सन् 1954 ई. में दारा सिंह रूस्तम–ए–हिंद और 1968 में रूस्तम–ए–जहां बने।
2. 29 मई 1968 को विश्व चैंपियन लू थाईस को हराकर वे फ्रीस्टाइल कुश्ती के विश्व चैंपियन बने।
3. उन्होंने 55 वर्ष की आयु तक 500 कुश्ती लड़ी और सबमें विजयी रहे।
4. उन्हें टी.वी.सीरियल रामायण में हनुमान जी के अभिनय से अपार लोकप्रियता मिली। उन्होंने हिंदी, पंजाबी, भोजपुरी आदि लगभग 100 फिल्मों में सफल अभिनय किया।

5. फिल्मों की कुछ उल्लेखनीय भूमिकाएं जैसे– जब वी मेट, दिल अपना पंजाबी, डाकू मंगल सिंह, मेरा नाम जोकर, अजुबा, सिकंदरे–आजम् व रामायण में हनुमान आदि की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
6. अगस्त 2003 से अगस्त 2009 तक वे राज्य सभा के सदस्य रहे पहलवान, अभिनेता व राजनितिज्ञ आदि जीवन के तीनों अभिनय सफलतापूर्वक निभाए।
7. 1968 में जब विश्व कुश्ती चैंपियनशिप जीती तो वे ऐसे पहले भारतीय थे, जिन्होंने विश्व चैंपियनशिप का खिताब हासिल किया।
8. हेलसिंकी में 1952 में ओलंपिक में कुश्ती में भारत का प्रतिनिधित्व किया और ओलंमपिक में गोल्ड मेडल जीता।
9. भारतीय सिनेमा में पहले सफल क्रॉसओवर अभिनेताओं में से एक माना गया।
10. दारा सिंह जी ने 1980 के दशक के अंत में प्रसारित टी.वी. सिरियल "रामायण" में भगवान राम के हनुमान के रूप में अपनी भूमिका के लिए अपार लोकप्रियता हासिल की।
11. दारा सिंह जी कई अन्य टी.वी. शो में भी दिखाई दिए और लोकप्रिय टी.वी. शो "महफिल" की मेजबानी की जिसमें भारतीय पारम्परिक संगीत और नृत्य का प्रदर्शन किया गया।
12. दारा सिंह जी अपनी परोपकारी गतिविधियों के लिए भी जाने जाते थे और जीवन भर विभिन्न धमार्थ कार्यों में शामिल रहें।
13. इन्हें खेल और मनोरंजन में उनके योगदान के लिए 1961 में भारत गणराज्य में चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार प्रतिष्ठित पद्श्री से सम्मानित किया गया।
14. उनका असली नाम दीदार सिंह रंधावा था बाद में दारा सिंह के नाम से मशहूर हुए।
15. उनका जन्म 19 नवम्बर, 1928 को अमृतसर के धर्मचुक गांव में हुआ और 12 जुलाई, 2012 को बम्बई में उनका देहान्त हुआ।

पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह

– बी.एस. गिल, सचिव
जाट सभा

महाराजा रणजीत सिंह की गणना भारत के महान शासकों में की जाती है। बौद्ध काल में बौद्ध धर्म में जो महत्व मौर्य जाट सम्राट महान अशोक का है वही सिक्खों और जाटों में शिवि गोत्र के जाट महाराजा रणजीतसिंह का है। एक साधारण स्तर से प्रगति करके उसने सारे पंजाब पर अपना आधिकार जमा लिया था। महाराजा रणजीत सिंह में एक जन्मजात शासक की विशेषताएं थी। जिन्हें दुर्दांत पठानों से ज्यादा भारत का पता था। उन्हें दंड देकर महाराजा रणजीत सिंह ने ही अपने अधीन किया।

महाराजा रणजीत सिंह का जन्म 13 नवंबर 1780 को गुजरांवाला में हुआ। इनके पिता चंद्रवंशी में शिवि गोत्र के जाट चौधरी महासिंह थे जोकि सुकरचकियां मिशल के नेता भरत सिंह के पुत्र थे। उस समय पंजाब छोटी–बड़ी 12 मिसलों में बटा हुआ था। इनमें 10 जाटों के अधीन और 2 खत्री सिक्खों के अधीन थी। बचपन में ही चेचक से उनकी बाईं आंख चली गई थी। 5 वर्ष की आयु में जब स्कूल में भेजा गया, तो उनका पढ़ने में मन नहीं लगा और स्कूल जाना बंद कर दिया था।सन् 1792 ईस्वी में सरदार महासिंह की मृत्यु हो गई। उस समय इनकी आयु 12 वर्ष की थी। इसलिए 1792 ईस्वी से लेकर 1797 ईस्वी तक सुकरचकियां मिशल का शासन प्रबंधन उनकी माता राज कौर तथा दीवान लखपत राय के हाथों में रहा। 1796 ईस्वी में महाराजा रणजीत सिंह का विवाह महताबकौर के साथ होने से उसकी सास सदाकौर भी शासन प्रबंधन में हाथ बटाने लगी।

सन 1797 ईस्वी में रणजीत सिंह ने अपनी मिसल सुकरचकियां के शासन प्रबंधन की बागडोर अपने हाथ में ले ली। वह बचपन से ही वीर साहसी एवं महत्वकांक्षी थे और पूरे पंजाब पर ही अपना अधिकार करना चाहते थे।

शासन की बागडोर संभालते ही उन्होंने अपनी सेना को नए सिरे से संगठित किया और सेना की संख्या बढ़ानी शुरू कर दी। सबसे पहले महाराजा रणजीत सिंह ने अपने भंगी मिशल पर चढ़ाई की, वहां के सरदार मोहर सिंह और साहब सिंह लाहौर छोड़कर भाग गए और 7 जुलाई 1799 ईस्वी में महाराजा का लाहौर पर अधिकार हो गया। महाराजा ने 1805 में अमृतसर पर भी अधिकार कर लिया। इस तरह से धीरे–धीरे अपनी सेना भी बढ़ाते रहें और अन्य राज्यों पर भी विजय प्राप्त करते रहे।

पंजाब का मिशलों पर विजय (1802 से 1811 ईस्वी)

महाराजा रणजीत सिंह ने अन्य मिशलों पर कब्जा करने हेतु बड़ी चतुराई और योग्यता से काम लिया। उसने अहलूवालिया,

रामगढ़िया और कन्हैया मिशल के सरदारों से दोस्ती कर ली और उनकी सहायता से दुर्बल मिशलो पर बिना किसी कारण से हमला कर दिया और विजयी होकर अपने राज्य में उनके क्षेत्रों को मिला लिया। 1802 ईस्वी में अकालगढ़ पर कब्जा कर लिया। 1807ईस्वी में महाराजा ने ढ़ल्लोवालिया मिशल पर कब्जा कर लिया और अपने राज्य में मिला लिया।

सन 1808 ईस्वी में सियालकोट के जीवन सिंह को हराकर उसके प्रदेश पर कब्जा कर लिया और 1810 ईस्वी में निकिया मिशल तथा गुजरात के प्रदेश को जीत लिया। सन 1811 ईस्वी में फैजुल्ला पूरी मिशल को अपने राज्य में मिलाया। सन् 1806–07 में फुलकिया मिशल, जिसमें पटियाला, नाभा तथा जींद आते थे, उन पर हमले किए और उनसे नजराना वसूला।

कसूर और झंग की विजय

1807 ईस्वी में महाराजा रणजीत सिंह ने कसूर के शासक कुतुबुद्दीन को हराकर कसूर को अपने अधिकार में ले लिया। इसी वर्ष झंग के शासक अहमदखां को हराया जो अन्य मूलक शासकों में मिलकर महाराजा के विरुद्ध षड्यंत्र रचता रहा था। इस युद्ध में वीरता दिखाने पर 15 वर्षीय हरि सिंह नलवा को महाराजा ने एक जागीर प्रदान की।

कांगड़ा पर अधिकार

1809 ईस्वी में कांगड़ा के शासक संसारचंद कटोच ने गोरखा शत्रुओं को भगाने हेतु महाराजा से मदद मांगी बदले में कांगड़ा ने मदद देने का वादा किया और बाद में मुकर गया। दोबारा जाकर उसके बेटे अनुरोधचंद्र को कैद कर लिया और फिर विवश होकर संसारचंद्र कटोच ने कांगड़ा महाराजा रणजीत सिंह को देना पड़ा।

तन और अटक की विजय (1813 ई.)

सन 1813 ईस्वी में काबुल वजीर फतेहखां से संधि कर ली और अटक विजय में फतेहखां ने संधि अनुसार महाराजा की मदद की और मुल्तान विजय में भी मदद का वचन दिया। 1802 में रणजीत सिंह ने मुल्तान पर हमला किया लेकिन वहां का शासक मुजफरखां ने उसे नजराना देकर अपना पीछा छुड़ा लिया। इसी तरह से उसने 6 बार नजराना देकर रणजीत सिंह से पीछा छुड़वाया लेकिन फिर भी मुख्य सेनापति श्री हरि सिंह नलवा थे।

15 फरवरी 1814 ई. में शूरवीर हरि सिंह नलवा और सरदार निहाल सिंह को साथ लेकर एक शक्तिशाली तोपखाना की मदद से मुल्तान पर हमला किया। इस हमले में हरी सिंह नलवा, निहाल सिंह और अतर सिंह बुरी तरह से जख्मी हो गए थे। उनको चिकित्सक हकीम अजीजुद्दीन ने बचा लिया। जब सेना किले में घुसी तो नवाब मुजफरखां ने सफेद झंडा दिखाकर अधीनता स्वीकार कर ली। उसने 2.5 लाख रुपये, 22 बहुमूल्य घोड़े और विद्रोह न करने का वचन दिया।

कश्मीर पर विजयः–

सन 1819 ईस्वी में महाराजा ने राजकुमार खड़ग सिंह, सरदार हरि सिंह व अकाली फूलासिंह की अध्यक्षता में एक सेना कश्मीर को विजय के लिए भेजी, सेना ने 1 मई को राजोरी पर अधिकार करके आगे कश्मीर गई और 3 जुलाई 1819 को शोपियां के मैदान में अफगानों और सिक्खों का युद्ध हुआ और जीत के बाद 4 जुलाई को सेना श्रीनगर में प्रवेश कर गई और वहां भी विजय मिली और कश्मीर में भी सिक्ख राज स्थापित्त कर दिया।

मुंघेर डेरा इस्माईलखां और बन्नू की विजय (सन 1821 ई):–

19 नवंबर 1821 को हरीसिंह नलवा ने मुंघेर पर अधिकार कर लिया और उसके बाद रणजीत सिंह ने सरदार हरिसिंह नलवा को लेकर सेना के साथ खानगढ़, मौजगढ़, कोहर, बन्नू, आशी, डेरा इस्माइल खान के परगन्नों पर कब्जा कर लिया। मुल्तानखान से पश्चिम में डेरा गाजी खान को सिक्खों ने 1820 में ही जीत लिया था।

पेशावर की विजय (1834 ईस्वी):–

महाराजा रणजीत सिंह की अंतिम तथा महत्वपूर्ण विजय पेशावर की थी जो कि महाराजा रणजीत सिंह ने 6 मई 1834 में शहर में प्रवेश करके किले पर कब्जा किया था। लेकिन काबुल का शासक दोस्त मोहम्मद खान पेशावर को सिक्खों से छीन लेना चाहता था। 11 मई 1835 में खैबर दर्रा के रास्ते निकला उधर सिक्ख भी इंतजार में थे। दिनभर लड़ाई चलती रही, शाम को दोस्त मोहम्मद और उसकी सेना मैदान छोड़कर भाग निकले और मुगलों ने फिर पेशावर की ओर मुंह नहीं किया।

इसके बाद खैबर दर्रा पर हरिसिंह नलवा ने एक मजबूत किला बनवाया। वहां फौजे और शस्त्र रखें और हजारा से बुलाकर सरदार महासिंह को किल्लेदार नियुक्त किया। इसी प्रकार और भी छोटे–छोटे किले बनवाए और अपनी सेनाओं को सुदृढ़ किया। वीर हरि सिंह नलवा 30 अप्रैल 1837 ईस्वी में जमरीद की लड़ाई में गोली लगने से वापिस अपने कैंप में आकर स्वर्ग सिधार गए थे। हरी सिंह नलवा सुंदर, बलशाली और बुद्धिमान थे, इसलिए महाराजा ने उन्हें 13 वर्ष की आयु में ही उसे अपना अंगरक्षक बना लिया था। बाघ की गर्दन मरोड़ कर उसे मारने के कारण उसका नाम 'नलवा' पड़ा था।

दर्राखैबर में जब अफगान और सिक्खों की सेनाएं आमने–सामने डटी थी तो वहां एक बहुत सुन्दर व जवान पठानी हरि सिंह नलवा से मिलने आई, तो नलवा साहब ने पूछा कि बीबी कैसे आई हो, तो पठानी ने कहा कि मैं आपसे शादी करके आप जैसा सुन्दर और बलशाली लड़का अपनी

कोख से पैदा करना चाहती हूं, तो हरि सिंह नलवा ने जबाब दिया कि ऐसा नहीं हो सकता, पठानी के काफी आग्रह करने के बाद, हरि सिंह नलवा जी ने जबाब दिया कि मुझे ही अपना लड़का समझ लो। यह सुनकर पठानी वापिस अपने अफगानो में चली गई।

श्री एन.के. सिंह अपने इतिहास 'रणजीती' पेज 167–68 पर लिखता है कि सरदार हरी सिंह नलवा इसलिए कहा जाता था कि उसने सिंह की गर्दन मरोड़ कर उसे मार डाला था। लेखक भी इससे सहमत है क्योंकि बचपन में इतिहास में इसे पढ़ा था।

राज्य विस्तारः–

इनके राज्य की सीमाएं उत्तर में कराकोरम से तिब्बत और उत्तर पश्चिम में हिंदूकुश पर्वत, दक्षिण में सतलुज नदी तक था। दक्षिण पश्चिम में सिंध प्रांत तक था। सिंधु नदी के पार डेरा इस्माइल खान, डेरा गाजी खान, बन्नू, कोहाट और पेशावर के प्रांत थे। इन की राजधानी लाहौर थी। जनरल कनिंघम ने दिल्ली से पेशावर और सिंध से कराकोरम तक बताया है। 25 अप्रैल 1809 में अंग्रेजों और महाराजा के बीच संधि हो गई थी कि महाराजा सतलुज पार करके पूर्व में ना बढ़े। यदि महाराजा यह संधि न करते और राज्य का विस्तार करते तो इससे दिल्ली का रास्ता ज्यादा दूर नहीं था।

विदेशी अफसर दरबारीः–

महाराजा रणजीत सिंह के दरबार में 37 युरोपियन व विदेशी अफसर तैनात थे जिनमें इंग्लैंड से 6, जर्मनी से 3, स्पेन के 2, अमेरिका के 6, फ्रांस के 17, इटली का 1 और इंडोनेशियन 2 थे।

शादियांः–

महाराजा रणजीत सिंह की 18 पत्नियां थी। इनमें 7सिक्ख जाट, 5 हिंदू जाट,2 राजपूत और 2 मुसलमानी थी। एक हिंदू जमीदार की ओर एक विदेशी संतान थी। इस तरह से उनको 18 रानियां थी। इन रानियों से इनके 7 पुत्र हुए। शेर सिंह, तारा सिंह, खड़क सिंह की मां रानी रतन कौर, जो कि सिंधु जाट गोत्र सरदार राम सिंह की पुत्री थी। शेर सिंह व तारा सिंह की मां रानी महताब कौर, जो सिंधु जाट चौधरी गुरबख्श सिंह की पुत्री थी।

मुल्तान सिंह की मां रानी रतन कौर थी, कश्मीरा सिंह और पिशोरा सिंह इनकी मां रानी दयाकौर थी। दलीप सिंह की मां का नाम रानी जिंदा था जोकि महाराजा रणजीत सिंह की अंतिम पत्नी थी। इनके तीन पौत्ते भी थे जो कि दलीप सिंह के पुत्र बिक्टर दलीप जोकि इंग्लैंड में ही पैदा हुआ था, खड़गसिंह का पुत्र नौनिहाल सिंह और तारा सिंह के पुत्र का नाम फतेह सिंह था ।

महाराजा रणजीत सिंह का मुगलों और अंग्रेजों में इतना खौफ था कि कोई भी इनकी सीमाओं की तरफ नजर भर के भी नहीं देख सकता था।

एक समय की बात है कि जींद व पटियाला रियासत में आपसी झगड़ा हो गया था क्योंकि वे आपस में रिश्तेदार थे और उधर महाराजा रणजीत सिंह भी इनके रिश्तेदार थे। दोनों में समझौता करवाने हेतु महाराजा रणजीत सिंह को बुलवा लिया। महाराजा अपने साथ कुछ सेना भी ले आया क्योंकि स्वाभाविक है कि राजा के साथ सेना तो होगी ही। जब वायस राय भारत सरकार ने लंदन सरकार से इसका जिक्र किया कि महाराजा रणजीत सिंह ने संधि का उल्लंघन किया है, तो लंदन से जवाब आया कि छेड़ना नहीं 8–10 दिन में समझौता करवा कर वापिस चला जाएगा, यदि छेड़ दिया तो हमें भारत के इतने बड़े साम्राज्य से ही हाथ धोना पड़ सकता है।

महाराजा जवाहर सिंह और महाराजा रणजीत सिंह भारत के ऐसे जाट योद्धा हुए हैं जिन्होंने मुगल शहजादीयों के डोले लिए है वरना मुगलों ने हमेशा राजपूतों की राजकुमारियों के डोले लिए हैं।

स्वर्गवासः–

वीर योद्धा पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह का 27 जून 1839 में स्वर्गवास हो गया। उनके बाद सिक्खों का पतन हो गया क्योंकि उनके पुत्रों में उन जैसा कर्मठ बहादुर और योग्य नहीं था जो इतनी बड़ी विरासत को संभाल सके।

महाराजा रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद उनका उत्तराधिकारी खड़कसिंह अयोग्य था उसका पुत्र नौनिहाल सिंह सिक्ख राज्य का कर्ताधर्ता बना। 27 दिन के बाद जब वह अपने पिता का दाह संस्कार करके वापस आ रहा था तो षड्यंत्र के तहत नौनिहाल सिंह पर बहुत सी ईंटे गिरवा दी, चोटों के कारण 1 घंटे में ही इनकी मृत्यु हो गई। इन की माता चांदकौर ने राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले ली। दरबार में षड़यंत्रों की भरमार हो गई। सन 1842 ईस्वी में शेर सिंह ने लाहौर पर अधिकार करके रानी चांदकौर का वध कर दिया। एक ब्राह्मण कुल कलंक तेजसिंह और लालसिंह सेनापति थे। उन्होंने 1845 ईस्वी में सिक्ख सेना की गश्ती टुकड़ी का हरि के पतन नामक स्थान से सतलुज पार करवा दिया तो अंग्रेजों ने बहाना मिल गया कि सिक्खों ने संधि का उल्लंघन किया है। अंग्रेजों ने इसको देखकर हमला करके 20 फरवरी 1846 को लाहौर तक चले गए और फिर 9 मार्च 1846 की संधि में दोआबा बिस्त जालंधर तक अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया और दूसरी लड़ाई में 12 मार्च 1849 को सिक्खों को लड़ाई में हार मिली और 5 अप्रैल 1849 को डलहौजी द्वारा सिख साम्राज्य का विलय करवा लिया गया। इस तरह से एकमात्र सिक्ख साम्राज्य का अन्त हो गया।

लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल, स्वतन्त्रता सेनानी एवं सच्चे देशभक्त थे

– लक्ष्मण सिंह फौगाट

वल्लभभाई झावेरभाई पटेल भारत के एक स्वतंत्रता सेनानी, अधिवक्ता तथा राजनेता थे। उन्हें लोग सरदार पटेल के नाम जानते हैं। "सरदार" का अर्थ है "प्रमुख"। उन्होंने भारत के पहले उप–प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता थे जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई। स्वतंत्र भारत में देशी रियसतों के एकीकरण की महान चुनौती को उन्होंने सफलतापूर्वक हल किया। 1947 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान गृह मंत्री के रूप में कार्य किया। इसलिये उन्हें लौहपुरुष के नाम से भी जानते है।

पटेल का जन्म 31 अक्तूबर, 1875 को नडियाद, गुजरात में एक किसान पटेल, जाति में हुआ था। वे झवेरभाई पटेल एवं लाडबा देवी की चौथी संतान थे। सोमाभाई, नरसीभाई और विट्ठलभाई उनके अग्रज थे। उनकी शिक्षा मुख्यतः स्वाध्याय से ही हुई। लन्दन जाकर उन्होंने बैरिस्टर की पढाई की और वापस आकर अहमदाबाद में वकालत करने लगे। महात्मा गांधी के विचारों से प्रेरित होकर उन्होने भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में सरदार पटेल का सबसे पहला और बड़ा योगदान 1918 में खेडा संघर्ष में हुआ। गुजरात का खेडा खण्ड (डिविजन) उन दिनों भयंकर सूखे की चपेट में था। किसानों ने अंग्रेज सरकार से भारी कर में छूट की मांग की। जब यह स्वीकार नहीं किया गया तो सरदार पटेल, गांधीजी एवं अन्य लोगों ने किसानों का नेतृत्व किया और उन्हे कर न देने के लिये प्रेरित किया। अन्त में सरकार झुकी और उस वर्ष करों में राहत दी गयी। यह सरदार पटेल की पहली सफलता थी।

बारडोली सत्याग्रह, भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान वर्ष 1928 में गुजरात में हुआ एक प्रमुख किसान आंदोलन था, जिसका नेतृत्व वल्लभभाई पटेल ने किया। उस समय प्रांतीय सरकार ने किसानों के लगान में तीस प्रतिशत तक की वृद्धि कर दी थी। पटेल ने इस लगान वृद्धि का जमकर विरोध किया। सरकार ने इस सत्याग्रह आंदोलन को कुचलने के लिए कठोर कदम उठाए, पर अंततः विवश होकर उसे किसानों की मांगों को मानना पड़ा। एक न्यायिक अधिकारी ब्लूमफील्ड और एक राजस्व अधिकारी मैक्सवेल ने संपूर्ण मामलों की जांच कर 22 प्रतिशत लगान वृद्धि को गलत ठहराते हुए इसे घटाकर 6. 03 प्रतिशत कर दिया।

इस सत्याग्रह आंदोलन के सफल होने के बाद वहां की महिलाओं ने वल्लभभाई पटेल को 'सरदार' की उपाधि प्रदान की। किसान संघर्ष एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के अंर्तसबंधों की व्याख्या बारदोली किसान संघर्ष के संदर्भ में करते हुए गांधीजी ने कहा कि इस तरह का हर संघर्ष, हर कोशिश हमें स्वराज के करीब पहुंचा रही है और हम सबको स्वराज की मंजिल तक पहुंचाने में ये संघर्ष सीधे स्वराज के लिए संघर्ष से कहीं ज्यादा सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

यद्यपि अधिकांश प्रान्तीय कांग्रेस समितियाँ पटेल के पक्ष में थीं, गांधी जी की इच्छा का आदर करते हुए पटेल जी ने प्रधानमंत्री पद की दौड से अपने को दूर रखा और इसके लिये नेहरू का समर्थन किया। उन्हे उपप्रधान मंत्री एवं गृह मंत्री का कार्य सौंपा गया।

गृह मंत्री के रूप में उनकी पहली प्राथमिकता देसी रियासतों (राज्यों) को भारत में मिलाना था। इसको उन्होने बिना कोई खून बहाये सम्पादित कर दिखाया। केवल हैदराबाद स्टेट के आपरेशन पोलो के लिये उनको सेना भेजनी पडी। भारत के एकीकरण में उनके महान योगदान के लिये उन्हे भारत का लौह पुरूष के रूप में जाना जाता है।

स्वतंत्रता के समय भारत में 562 देसी रियासतें थीं। इनका क्षेत्रफल भारत का 40 प्रतिशत था। सरदार पटेल ने आजादी के ठीक पूर्व (संक्रमण काल में) ही वीपी मेनन के साथ मिलकर कई देसी राज्यों को भारत में मिलाने के लिये कार्य आरम्भ कर दिया था। पटेल और मेनन ने देसी राजाओं को बहुत समझाया कि उन्हे स्वायत्तता देना सम्भव नहीं होगा। इसके परिणामस्वरूप तीन को छोडकर शेष सभी राजवाडों ने स्वेच्छा से भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। केवल जम्मू एवं कश्मीर, जूनागढ तथा हैदराबाद स्टेट के राजाओं ने ऐसा करना नहीं स्वीकारा। जूनागढ सौराष्ट्र के पास एक छोटी रियासत थी और चारों ओर से भारतीय भूमि से घिरी थी। वह पाकिस्तान के समीप नहीं थी। वहाँ के नवाब ने 15 अगस्त 1947 को पाकिस्तान में विलय की घोषणा कर दी। राज्य की सर्वाधिक जनता हिंदू थी और भारत में विलय चाहती थी। नवाब के विरुद्ध बहुत विरोध हुआ तो भारतीय सेना जूनागढ़ में प्रवेश कर गयी। नवाब भागकर पाकिस्तान चला गया और 9 नवम्बर 1947 को जूनागढ भी भारत में मिल गया। फरवरी 1948 में वहाँ जनमत संग्रह कराया गया, जो भारत में विलय के पक्ष में रहा। हैदराबाद भारत की सबसे बड़ी रियासत

थी, जो चारों ओर से भारतीय भूमि से घिरी थी। वहाँ के निजाम ने पाकिस्तान के प्रोत्साहन से स्वतंत्र राज्य का दावा किया और अपनी सेना बढ़ाने लगा। वह ढेर सारे हथियार आयात करता रहा। पटेल चिंतित हो उठे। अन्ततः भारतीय सेना 13 सितंबर 1948 को हैदराबाद में प्रवेश कर गयी। तीन दिनों के बाद निजाम ने आत्मसमर्पण कर दिया और नवंबर 1948 में भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। नेहरू ने काश्मीर को यह कहकर अपने पास रख लिया कि यह समस्या एक अन्तर राष्ट्रीय समस्या है। कश्मीर समस्या को संयुक्त राष्ट्रसंघ में ले गये और अलगाववादी ताकतों के कारण कश्मीर की समस्या दिनोदिन बढ़ती गयी। 5 अगस्त 2019 को प्रधानमंत्री मोदीजी और गृहमंत्री अमित शाह जी के प्रयास से कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाला अनुच्छेद 370 और 35(अ) समाप्त हुआ। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग बन गया और सरदार पटेल का अखण्ड भारत बनाने का स्वप्न साकार हुआ। 31 अक्टूबर 2019 को जम्मू–कश्मीर तथा लद्दाख के रूप में दो केन्द्र शासित प्रदेश अस्तित्व में आये। अब जम्मू–कश्मीर केन्द्र के अधीन रहेगा और भारत के सभी कानून वहाँ लागू होंगे। पटेल जी को कृतज्ञ राष्ट्र की यह सच्ची श्रद्धांजलि है। सरदार पटेल के पास कश्मीर का मामला होता तो ये नौबत ही नहीं आती और सारा का सारा कश्मीर पहले से ही भारत का हिस्सा होता।

स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. नेहरू व प्रथम उप प्रधानमंत्री सरदार पटेल में आकाश–पाताल का अंतर था। यद्यपि दोनों ने इंग्लैण्ड जाकर बैरिस्टरी की डिग्री प्राप्त की थी परंतु सरदार पटेल वकालत में पं० नेहरू से बहुत आगे थे तथा उन्होंने सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य के विद्यार्थियों में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था। नेहरू प्रायः सोचते रहते थे, सरदार पटेल उसे कर डालते थे। नेहरू शास्त्रों के ज्ञाता थे, पटेल शास्त्रों के पुजारी थे। पटेल ने भी ऊंची शिक्षा पाई थी परंतु उनमें किंचित भी अहंकार नहीं था। वे स्वयं कहा करते थे, "मैंने कला या विज्ञान के विशाल गगन में ऊंची उड़ानें नहीं भरीं। मेरा विकास कच्ची झोपड़ियों में गरीब किसान के खेतों की भूमि और शहरों के गंदे मकानों में हुआ है।" पं० नेहरू को गांव की गंदगी, तथा जीवन से चिढ़ थी। पं० नेहरू अन्तरराष्ट्रीय ख्याति के इच्छुक थे तथा समाजवादी प्रधानमंत्री बनना चाहते थे।

देश की स्वतंत्रता के पश्चात सरदार पटेल उप प्रधानमंत्री के साथ प्रथम गृह, सूचना तथा रियासत विभाग के मंत्री भी थे। सरदार पटेल की महानतम देन थी 562 छोटी–बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलीनीकरण करके भारतीय एकता का निर्माण करना। विश्व के इतिहास में एक भी व्यक्ति ऐसा न हुआ जिसने इतनी बड़ी संख्या में राज्यों का एकीकरण करने का साहस किया हो। 5 जुलाई 1947 को एक रियासत विभाग की स्थापना की गई थी। एक बार उन्होंने सुना कि बस्तर की रियासत में कच्चे सोने का बड़ा भारी क्षेत्र है और इस भूमि को दीर्घकालिक पट्टे पर हैदराबाद की निजाम सरकार खरीदना चाहती है। उसी दिन वे परेशान हो उठे। उन्होंने अपना एक थैला उठाया, वी.पी. मेनन को साथ लिया और चल पड़े। वे उड़ीसा पहुंचे, वहां के 23 राजाओं से कहा, "कुएं के मेढक मत बनो, महासागर में आ जाओ।" उड़ीसा के लोगों की सदियों पुरानी इच्छा कुछ ही घंटों में पूरी हो गई। फिर नागपुर पहुंचे, यहां के 38 राजाओं से मिले। इन्हें सैल्यूट स्टेट कहा जाता था, यानी जब कोई इनसे मिलने जाता तो तोप छोड़कर सलामी दी जाती थी। पटेल ने इन राज्यों की बादशाहत को आखिरी सलामी दी। इसी तरह वे काठियावाड़ पहुंचे। वहां 250 रियासतें थी। कुछ तो केवल 20–20 गांव की रियासतें थीं। सबका एकीकरण किया। एक शाम मुम्बई पहुंचे। आसपास के राजाओं से बातचीत की और उनकी राजसत्ता अपने थैले में डालकर चल दिए। पटेल पंजाब गये। पटियाला का खजाना देखा तो खाली था। फरीदकोट के राजा ने कुछ आनाकानी की। सरदार पटेल ने फरीदकोट के नक्शे पर अपनी लाल पैंसिल घुमाते हुए केवल इतना पूछा कि "क्या मर्जी है?" राजा कांप उठा। आखिर 15 अगस्त 1947 तक केवल तीन रियासतें–कश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद छोड़कर उस लौह पुरुष ने सभी रियासतों को भारत में मिला दिया। इन तीन रियासतों में भी जूनागढ़ को 9 नवम्बर 1947 को मिला लिया गया तथा जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान भाग गया। 13 नवम्बर को सरदार पटेल ने सोमनाथ के भग्न मंदिर के पुनर्निर्माण का संकल्प लिया, जो पंडित नेहरू के तीव्र विरोध के पश्चात भी बना। 1948 में हैदराबाद भी केवल 4 दिन की पुलिस कार्रवाई द्वारा मिला लिया गया। न कोई बम चला, न कोई क्रांति हुई, जैसा कि डराया जा रहा था।

जहां तक कश्मीर रियासत का प्रश्न है इसे पंडित नेहरू ने स्वयं अपने अधिकार में लिया हुआ था, परंतु यह सत्य है कि सरदार पटेल कश्मीर में जनमत संग्रह तथा कश्मीर के मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले जाने पर बेहद क्षुब्ध थे। निःसंदेह सरदार पटेल द्वारा यह 562 रियासतों का एकीकरण विश्व इतिहास का एक आश्चर्य और चमत्कार था। भारत की यह रक्तहीन क्रांति थी। महात्मा गांधी ने सरदार पटेल को इन रियासतों के बारे में लिखा था, रियासतों की समस्या इतनी

जटिल थी जिसे केवल तुम ही हल कर सकते थे। जो तुम ने बड़े प्यार से सारा हल कर लिया।

यद्यपि विदेश विभाग पं० नेहरू का कार्यक्षेत्र था, परन्तु कई बार उप प्रधानमंत्री होने के नाते कैबिनेट की विदेश विभाग समिति में उनका जाना होता था। उनकी दूरदर्शिता का लाभ यदि उस समय लिया जाता तो अनेक वर्तमान समस्याओं का जन्म न होता। 1950 में पंडित नेहरू को लिखे एक पत्र में पटेल ने चीन तथा उसकी तिब्बत के प्रति नीति से सावधान किया था और चीन का रवैया कपटपूर्ण तथा विश्वासघाती बतलाया था। अपने पत्र में चीन को अपना दुश्मन, उसके व्यवहार को अभद्रतापूर्ण और चीन के पत्रों की भाषा को किसी दोस्त की नहीं, भावी शत्रु की भाषा कहा था। उन्होंने यह भी लिखा था कि तिब्बत पर चीन का कब्जा नई समस्याओं को जन्म देगा। 1950 में नेपाल के संदर्भ में लिखे पत्रों से भी पं० नेहरू सहमत न थे। 1950 में ही गोवा की स्वतंत्रता के संबंध में चली दो घंटे की कैबिनेट बैठक में लम्बी वार्ता सुनने के पश्चात सरदार पटेल ने केवल इतना कहा "क्या हम गोवा जाएंगे, केवल दो घंटे की बात है।" नेहरू इससे बड़े नाराज हुए थे। यदि पटेल की बात मानी गई होती तो 1961 तक गोवा की स्वतंत्रता की प्रतीक्षा न करनी पड़ती।

गृहमंत्री के रूप में वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारतीय नागरिक सेवाओं (आई.सी.एस.) का भारतीयकरण कर इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवाएं (आई.ए.एस.) बनाया। अंग्रेजों की सेवा करने वालों में विश्वास भरकर उन्हें राजभक्ति से देशभक्ति की ओर मोड़ा। यदि सरदार पटेल कुछ वर्ष जीवित रहते तो संभवतः नौकरशाही का पूर्ण कायाकल्प हो जाता।

सरदार पटेल जहां पाकिस्तान की चालाकी पूर्ण चालों से सतर्क थे वहीं देश के विघटनकारी तत्वों से भी सावधान करते थे। विशेषकर वे भारत में मुस्लिम लीग तथा कम्युनिस्टों की विभेदकारी तथा रूस के प्रति उनकी भक्ति से सजग थे। अनेक विद्वानों का कथन है कि सरदार पटेल बिस्मार्क की तरह थे। लेकिन लंदन के टाइम्स ने लिखा था बिस्मार्क की सफलताएं पटेल के सामने महत्वहीन रह जाती हैं। यदि पटेल के कहने पर चलते तो कश्मीर, चीन, तिब्बत व नेपाल के हालात आज जैसे न होते। पटेल सही मायनों में मनु के शासन की कल्पना थे। उनमें कौटिल्य की कूटनीतिज्ञता तथा महाराज शिवाजी की दूरदर्शिता थी। वे केवल सरदार ही नहीं बल्कि भारतीयों के हृदय के सरदार थे। जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला एवं कटरा की कार्यकारी के सभी सदस्यों की तरफ से लोहपुरुष एवं एक सच्चे देशभक्त को कोटी–कोटी प्रणाम! के भारत के एक सच्चे सपूत थे।

बिखरे ना हमारा बंधन

अंकुर सिंह,
हरदासीपुर, जौनपुर

अबकी जो तुमसे बिछड़ा,
जीते जी मैं मर जाऊंगा ।
रहकर जग में चलते फिरते,
जिंदा लाश कहलाऊंगा ।।

रह लो शायद तुम मुझ बिन,
पर, मेरा जहां तुम बिन सूना ।
छोड़ तुम्हें अब मैं ना जाऊंगी,
भूल गई क्यों कहा ऐसा अपना ?

एक प्रेम तरु के हम दो डाली,
बिन हवा कैसे तुम के टूट गई ?
तुम्हारे वादों संग चाहा जीना,
फिर तुम मुझसे क्यों रूठ गई ?

कभी तुम सुना देती, कभी मैं,
लड़ रातें सवेरे एक हो जाते ।
जिस रात तुम्हें पास न पाया,
उस रात मेरे नैना नीर बहाते ।।

सात जन्मों का है जो वादा,
हर हाल है उसे निभाना ।
मिलकर खोजेंगे हम युक्ति,
यदि जग बना प्रेम में बाधा।।

अबकी जो तुमसे बिछड़ा,
आहत मन से टूट गया हूं ।
पढ़ रही हो तो वापस आओ,
तुम बिन मैं अधूरा हूं..... ।।

रिश्तों पर मुझसे जो चूक हुई,
उस पर कर रहा कर वंदन ।
जो भूल हुई उसे बिसरा दो,
ताकि बिखरे ना हमारा बंधन ।।

दीनबंधु चौ. छोटूराम के व्यक्तित्व का अवलोकन

– सूरजभान दहिया

साल में मिलकर हम दीनबंधु छोटूराम को कृतज्ञता स्वरूप दो बार नमन करते हैं। एक तो 24 नवम्बर को तथा दूसरा बसंत पंचमी को। चौ. छोटूराम 24 नवम्बर 1881 को सांपला से सटे छोटे से गांव, गढ़ी (सांपला) में पैदा हुये थे। बसंत पंचमी पंजाब के किसानों ने छोटूराम जयंती के रूप में तब मनाई जब चौ. छोटूराम ने पंजाब में किसान राज स्थापित कर दिया था। 1939 में बसंत पंचमी के किसान मेले में प्रथम बार चौ. छोटूराम किसान भाइयों से रूबरू हुये और कहा था– "मै मूलतः खेतिहर परिवार में पैदा हुआ हूं और मेरी आस्था खेती में है, मेरा मन खेती में है और मेरा दिमाग किसान के कल्याण के लिए दिन–रात काम करता रहता है, मै अपने आपको धरती का बेटा मानता हूं, धरती मां, सबका पेट भरती है और किसान भाइयों तुम इसके सेवादार हो। तो मेरा और आपका धरती मां और खेती से आत्मिक संबंध है। किसान के घर में गुरब्बत मुझे सदा विचलित करती रही है। अन्न पैदा करने वाला जब रात को भूखा सोये, यह पीड़ा मुझे सताती रहती थी, कोसती रहती थी। उधर जब मुझे दूर से गिरवी पड़ी धरती मां की पुकार सुनती थी, मै कांप जाता था, बार–बार वह मुझे कहती मुझे अपने पास ले चल, मै गैर के घर (बणिया) में घूंटन महसूस कर रही हूं। मै लाचार कुछ नही कर पर रहा था। पर मन में एक .ढ़ संकल्प तो बहुत पहले से ही लिया हुआ था कि किसान कर्जमुक्त होगा और गिरवी पड़ी धरती मां आजाद होगी, वापस अपने किसान लाडले के घर में आयेगी। आज मैने इन दोनों अभिशापों से मुक्ति दिला दी है। आज मेरे पंजाब के किसान के घर में खुशहाली है, इसलिये मै किसान पर्व बसंत पंचमी पर आपके बीच में हूं। आपने जो मुझे सरसों के पीले फूलों की सुगंध दी है वह यह साबित करती है कि मैने जो जमीदारा पार्टी को जोखिम उठाया था, वह फैसला सही था, नतीजा मै आपके मुस्कारते चेहरों से जान पा रहा हूं। आप सभी भाई अपनी जमीदारा पार्टी को सीचतें रहेगे, मुझे ताकत देते रहेंगे और मैं काणी डांडी और कर्जे के हत्थे कारखाने पंजाब से खत्म कर दूंगा। कर्जे के तिजारती न जाने कहां कहां से आकर किसान का खून चूस रहे थे अब उन्हें मैनें नकेल डाल दी है, अब बस आपका राज, आपका काम और मैं आपका सेवक।"

84 साल हो गये हैं, इस उपरोक्त तकरीर को दिये हुये, परन्तु इसके मजबून को पढ़कर मन में नया उल्लास उत्पन्न हो जाता है, हे दीनबंधु आप धन्य हैं, हम आपकी स्मृति में नतमस्तक हैं।

उधर चौ. छोटूराम के 24 नवम्बर 1881 के जन्म की भी खुशी सांझा कर ले। किसान अवतार का जमीन पर आना, चौ. सुखीराम के घर थाली बजी, गली–मुहल्ले में खुशी की लहर दौड़ गई, "शिवजी ने भेजा किसान अवतार" हो रामजी रूजनास की पवन चली खेत में, जमीदार के सुख के दिन आवेगे बे इंतजार, हो राम जी"

दसवें दिन हम खातिर चौ. सुखीराम ने पंडित को बुलाया। पंडित ने बालक का नाम दिया राम रिछपाल। पर घर में बालक को छोटू कहने लग गये। हर किसी की जुबान पर बस छोटू – छोटू यानी कान्हा–कान्हा हो गया। यह सब नियति का खेल था। संकेत साफ थे, कुछ तो छोटू लीला रचेगे, अजूबी जरूर।

छोटू का बचपन जाट, ब्राहमण और अन्य खेतीहर परिवार के बालकों के साथ खेलने, कूदने में बीता। घर के पास चौपाल थी। चौपाल में उपदेशक, भजनीक और सामाजिक वक्ता आते रहते थे। उनको सुनना चौ. छोटूराम को प्रभावित करता था। महाभारत और आल्हा, उदल की वीर रस की कथाएं और मुगल और अंग्रेजों के जुल्म के किस्से सुनते–सुनते उनका बचपन बीता, जिनके कारण उनके अन्दर प्रगतिशील व प्रतिशोध की भावनाएं जागृत हुई। जुल्म का ड़टकर विरोध करना और निडरता के साथ जीने का नाम ही जीवन हैं। यह विचारधारा उनके मन में घर कर चुकी थी। जब वह महाभारत की कथा सुनता तो वह अपने आप को अभिमन्यु मान बैठता था, परन्तु बडी दृढ़ता से यह स्वीकार करता कि मैं अभिमन्यु की भांति हारूंगा नही। वह आदिकाल की महाभारत थी। मेरी तो दबे कुचलों की महाभारत है, शोषित की महाभारत है, किसान की महाभारत है, आज की महाभारत है। मेरा तो दुर्योधन, महाजन है। मेरा तो कर्जे के पासे फेंकने वाला बणिया शकुनि है, इनसे सुखीराम का अभिमन्यु हार कतई नही मानेगा। मेरी इनसे लड़ाई कोई 18 दिन की नही होने वाली है, मेरी तो लड़ाई लंबी चलेगी।

चौधरी छोटूराम अपनी वकालत की पढ़ाई करने के बाद अपने कुरुक्षेत्र के मैदान रोहतक में 1912 में आ पहुंचे, यह अभिमन्यु संपूर्ण अस्त्र–शस्त्रों से दक्ष था। अंग्रेजों ने एक चक्रव्यूह था जिससे बाहर निकलना जमीदार के लिए असंभव

था। अंग्रेजों ने इस चक्रव्यूह की घेराबंदी सूदखोरों, पटवारियों व अन्य अफसरों के साथ पुख्ता कर रखी थी।

चौ. छोटूराम ने न्याय युद्ध शुरू से पहले रणक्षेत्र में दुश्मन की तैनानी की समीक्षा की और विश्लेषण भी किया। विश्लेषण करने के पश्चात् चौ. छोटूराम ने जाना कि क्यों न पहले सूदखोर पर अटैक किया जाए जो चक्रव्यूह का सबसे प्रबल प्रहरी था। सूदखोर ने जमीदार को जकड़ा हुआ था, जमीदार को कर्ज देता था, मनमाना ब्याज लगाता था। जमीदार इतने मोटे ब्याज को देने में असमर्थ था। ब्याज बढ़ता रहता था। अंग्रेजों ने सूदखोर के पक्ष में एक ऐसा कानून बना रखा था जिसके तहत सूदखोर पैसे वसूल न होने के एवज में उसकी जमीन की कुर्की के लिए अदालत में अर्जी डाल देता था और कानून के तहत जमीदार की जमीन हड़प लेता था। आश्चर्य की यह बात थी कि इसकी कोई अपील, दलील नही होती थी। कर्जा कितना भी कम हो, पर कुर्की जमीन, जायदाद, घर, बैल सभी की हो जाती थी। चौ. छोटूराम ने किसान को इस शोषण चक्रव्यूह को तोड़ने हेतु कांग्रेस पार्टी की सदस्यता ले ली तथा रोहतक कांग्रेस कमेटी के प्रधान भी बन गये परन्तु यह पार्टी नीतिगत तौर पर जमीदार हितैषी नही थी, इसलिए चौ. छोटूराम ने इस पार्टी को छोड़ दिया। उन्होंने अपनी पार्टी बनाई जिसका नाम था यूनियनिस्ट पार्टी। यह नाम किसानों को कुछ अटपटा लगा और वे छोटूराम की पार्टी को जमीदारा पार्टी कहने लग गये। परिस्थितियां बदली, समय ने करवट ली इस जमीदारा पार्टी ने 1937 में पंजाब में चुनाव जीतकर अपनी सरकार बनाई। चौ. छोटूराम वजीर बने और अंग्रेजों के चक्रव्यूह को तोड़ने के लिए ऐसे कानून बनाये जिससे जमीदारों के कर्ज माफ हो गये, गिरवी पड़ी जमीन किसानों को फिर मिल गई और पंजाब का किसान सबसे खुशहाल हो गया। पंजाब का किसान जिसे एक जूण की रोटी नसीब नही होती थी वह देश के "अन्न भंडार" का मालिक हो गया। चौ. छोटूराम ने अपने कानूनों को सख्ती से लागू किया और बाट तराजू को नाकारा करके सूदखोरों के धंधे को चौपट कर दिया, बणिया जमीदार सरकार के मातहत आ गया, ब्याज के धंधे पर विराम लग गया, फिर ता बाणिया की बही के पन्नों पर चूर्णवाला चूर्ण बेचने लग गया।

पंजाब के बदलते परिवेश का अध्ययन करने हेतु एक अमेरिकी अध्ययन दल लाहौर पहुंचा। इसके पश्चात् यह अध्ययन दल चौ. छोटूराम के हिरक जयंती समारोह में सम्मिलित होने हेतु 1 मार्च, 1942 को चौ. छोटूराम के कुरूक्षेत्र के मैदान रोहतक में पहुंचा। जाट हाई स्कूल के ग्राउंड में दो लाख से ज्यादा की भीड़ को देखकर वह चकित रह गया। इस अपार भीड़ ने जब चौ. छोटूराम जिदांबाद का नारा लगाकर उन्हें 61 वें जन्मदिन की बधाई दी तो अमेरिकी दल के अध्यक्ष ने कहा–

"It is Amazing- None is greater than Rehbare Azam Ch. Chhotu Ram Hats off to might Ch. Chhotu Ram Great soul of peasantry and the largest heart of Punjab"

इस अमेरिकी अध्ययन दल ने पंजाब की जमीदारा सरकार के बारे में लिखा पंजाब में जो लघुकाल में क्रांतिकारी परिवर्तन हुये इनका संपूर्ण श्रेय चौ. छोटूराम को जाता है। उन्होंने सूझबूझ एवं बड़ी बुद्धिमत्ता से लोकतंत्र व्यवस्था का प्रयोग किया। पहले उन्होंने सूदखोरों को ठिकाने लगाया। इसके पश्चात् अंग्रेजी हुकूमत को विश्वयुद्ध काल में खाद्य सामग्री एवं सेनाबल जुटाने हेतु चौ. छोटूराम पर आश्रित होने के लिए विवश होना पड़ा। भले ही चर्चिल प्रधानमंत्री इंग्लैण्ड भारत के प्रति कठोर रूख रखते हैं, परन्तु वे भी युद्धकाल में भारत पर विशेषकर पंजाब पर निर्भर रहेगें। राजनैतिक .ष्टि से भले ही कांग्रेस एक राष्ट्रीय पार्टी है किन्तु पंजाब में तो यूनियनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया (जमीदारा पार्टी) का एकाधिकार है जिसके सर्वेसर्वा चौ. छोटूराम हैं। जिन्नाह पाकिस्तान के ख्वाब ले रहे हैं परन्तु वे छोटूराम के पंजाब में तो घुस नही सकते। चौ. छोटूराम रहते पाकिस्तान बस एक मृण तृष्णा है।

आज भारत किस मोड़ पर खड़ा है ? किसान को जो खुशहाली चौ. छोटूराम की नीतियों और कार्यक्रमों से प्राप्त हुई थी, वह आजादी के पश्चात् धीरे–धीरे लुप्त हो गई क्योंकि जो गोरी सरकार ने किसानों के विरूद्ध चक्रव्यूह रचा था उसे तो चौ. छोटूराम ने तोड़ दिया था पर वह चक्रव्यूह काली सरकार ने फिर रच दिया है। अब चौ. छोटूराम तो आने वाले हैं नही जो इस चक्रव्यूह को तोडे। आज मियादी किसान नेता तो असंख्य है। इसलिये हालात ठीक नही हैं . किसानों पर कर्जा बढ़ता जा रहा है, उनकी जमीनें छीनी जा रही हैं। किसान असीम संकट में है, असहाय है।

चौ. छोटूराम ने .षि कानून, .षि वित्त कानून, भू–संरक्षण कानून, वन कानून, जल कानून तथा ग्रामीण स्वराज कानून बनाये थे जो आज हमारी कानून प्रक्रिया से गायब कर दिये गये है, इसलिये ग्रामीण संकट आ खड़ा है। इन कानूनों को पुर्नजीवित करने वाली विभूति मुझे तो आज कही नही दिखाई दे रही।

दानवीर सेठ चौधरी छाजूराम

– सागर खोखर

दानवीर सेठ चौधरी छाजूराम का जन्म 28 नवम्बर 1861 को जाट परिवार के लाम्बा गोत्र में अलखपुरा गाम बवानीखेड़ा तहसील जिला भिवानी में हुआ। इनके पिता का नाम चौधरी सालिगराम था जोकि एक जमींदार थे।

सेठ छाजूराम का विवाह सांगवान खाप के हरिया डोहका गाम जिला भिवानी में कड़वासरा खंडन की दाखांदेवी के साथ हुआ था। लेकिन विवाह के कुछ समय बाद ही इनकी पत्नी का देहांत हैजे की बीमारी के कारण हो गया। दूसरा विवाह सन् 1890 में भिवानी जिले के ही बिलावल गांव में रांगी गोत्र की दाखांदेवी नाम की ही लड़की से हुआ। लेकिन बाद में उनका नाम बदलकर लक्ष्मीदेवी रख दिया गया। इन्होंने आठ संतानो को जन्म दिया, जिनमें पांच पुत्र व तीन पुत्रियां हुईं, लेकिन चार संतानें बाल्यावस्था में ही ईश्वर को प्यारी हो गई। सबसे बड़े सज्जन कुमार थे, जिनका युवावस्था में ही स्वर्गवास हो गया। उसके बाद दो लडके महेंद्र कुमार व प्रद्युमन कुमार थे। उनकी बड़ी बेटी सावित्री देवी मेरठ निवासी डॉ. नौनिहाल से ब्याही गई थी।

चौधरी छाजूराम ने अपने प्रारंभिक शिक्षा बवानीखेड़ा के स्कूल से 1877 में प्राप्त की। मिडल शिक्षा भिवानी से 1880 में पास करने के बाद उन्होंने रेवाड़ी से मैट्रिक(दसवीं) की परीक्षा 1882 पास की। मेधावी छात्र होने के कारण इनको स्कूल में छात्रवृतियां मिलती रहीं लेकिन परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण आगे की शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए। इनकी संस्कृत,अंग्रेजी,हिंदी और उर्दू भाषाओं पर बहुत अच्छी पकड़ थी।उस समय भिवानी में एक बंगाली इंजीनियर एसएन रॉय साहब रहते थे, जिन्होंने अपने बच्चों की ट्यूशन पढ़ाने के लिए चौधरी छाजूराम को एक रूपया प्रति माह वेतन के हिसाब से रख लिया। जब सन् 1883 में ये बंगाली इंजीनियर अपने घर कलकत्ता चले गए तो बाद में चौधरी छाजूराम को भी कलकत्ता बुला लिया। जिस पर इन्होंने इधर–उधर से कलकत्ता के लिए किराए का जुगाड़ किया तथा इंजीनियर साहब के घर पहुंच गए। वहां भी उसी प्रकार से उनके बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने लगे। साथ–साथ कलकत्ता में मारवाड़ी सेठों के पास आना–जाना शुरू हो गया, जिन्हें अंग्रेजी भाषा का बहुत कम ज्ञान था। लेकिन चौधरी छाजूराम ने उनकी व्यापार संबंधी अंग्रेजी चिट्ठियों के आदान–प्रदान में सहायता शुरू की, जिस पर मारवाड़ी सेठों ने इसके लिए मेहनताना देना शुरू कर दिया। थोड़े से दिनों में चौधरी छाजूराम मारवाड़ी समाज में एक गुणी मुंशी तथा कुशल मास्टर के नाम से प्रसिद्ध हो गए। इन्हें जूट–किंग भी कहा जाता था। चौधरी छाजूराम लाम्बा कलकत्ता के 24 बड़ी विदेशी कम्पनियों के शेयर होल्डर थे। इनसे चौधरी साहब को 16 लाख रुपए प्रति वर्ष लाभ मिलता था।

एक समय में इनकी सम्पति 40 मिलियन को पार कर गयी थी। इन्होंने 21 कोठी कलकत्ता में (14 अलीपुर, 7 बारा बाजार) में बनवायी। इन्होंने एक महलनुमा कोठी अलखपुरा में व एक शेखपुरा (हांसी) में बनवायी। चौधरी साहब ने हरियाणा के पांच गाँव भी खरीदे तथा भिवानी, हिसार और बवानीखेड़ा के शेखपुरा, अलीपुरा, अलखपुरा, कुम्हारों की ढाणी, कागसर, जामणी, खांडाखेड़ी व मोठ आदि गाँवों 1600 बीघा जमीन भी खरीदी। इनके पंजाब के खन्ना में रुई तथा मुगफली के तेल निकलवाने के कारखाने भी थे। उस जमाने में रोल्स–रॉयस कार केवल कुछ राजाओं के पास होती थी, लेकिन यह कार इनके बड़े बेटे सज्जन कुमार के पास भी थी।

कलकत्ता में रविन्द्र नाथ टैगोर के शांति निकेतन विश्वविद्यालय से लाहौर के डीएवी कॉलेज तक उस समय ऐसी कोई संस्था नहीं थी, जिसमें सेठ छाजूराम ने दान न दिया हो।हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना में दिल खोल कर दान दिया। 1909 में भिवानी में अनाथालय खोलने में दिल खोलकर दान दिया। 1925 में कालिका रंजन कानूनगो द्वारा जाटों का इतिहास प्रकाशित करने के खर्च का एक बड़ा हिस्सा चौधरी छाजूराम जियों ने वहन किया। सेठ चौधरी छोजूराम ने 1928 में पांच लाख रूपए की लागत से अपनी स्वर्गीय बेटी कमला की यादगार में लेडी हैली हॉस्पीटल बनवाया, जिस जगह पर आज भिवानी में चौधरी बंसीलाल सामान्य अस्पताल खड़ा है। चौधरी साहब ने रोहतक में जाट एंग्लो वैदिक हाई स्कूल की स्थापना में 61000 का योगदान दिया और मंच से घोषणा की जो बच्चा मैट्रिक में प्रथम रहेगा उसे एक सोने का मेडल ओर 12 रुपए मासिक वजीफा दिया जाएगा। यह सम्मान चौधरी सूरजमल हिसार ने प्राप्त किया था।

सन् 1918 में हिसार में सी ए वी स्कूल की स्थापना में 61000 हजार दान दिया, हिसार में जाट एंग्लो वैदिक हाई स्कूल की स्थापना में 500000 ते दान दिया, ऐसे न जाने कितने समाजिक कार्यो में चौधरी साहब ने लाखों दान दिए। गांधी जी के हर आंदोलन में सबसे बड़ा दान चौधरी छाजूराम लाम्बा जी देते थे। सुभाष चन्द्र बोस को भी उनके द्वारा चलाए गए आजादी के हर आंदोलनों में सबसे अधिक दान देते थे।। भरतपुर के महाराजा सर कृष्ण सिंह को 1926 में 2,50 लाख की भेंट दी ।17 दिसंबर 1928 को सांडर्स की

हत्या के बाद सरदार भगतसिंह और भाभी दुर्गा सेठ छाजूराम की कोठी कलकत्ता में लगभग ढ़ाई महीने तक रूके थे। क्रांतिकारी भगतसिंह को चौधरी साहब की धर्मपत्नी लक्ष्मी स्वयं बना कर भोजन देती थी।

चौधरी साहब की मुलाकात गाजियाबाद स्टेशन पर दीनबंधु चौधरी छोटूराम से हुई।इस मुलाकात में ही चौधरी साहब ने दीनबंधु छोटु राम का पढ़ाई का सारा खर्च उठाने की हां कीछोटूराम ने चौधरी छाजूराम को धर्म का पिता मान लिया। इन्होंने रोहतक में चौ. छोटूराम के लिए नीली कोठी का निर्माण भी करवाया। छोटूराम दीनबंधु नहीं होते और यदि दीनबंधु नहीं होते तो आज किसानों के पास जमीन भी नहीं होती। चौधरी छाजूराम नही होते तो भगत सिंह लोगो मे देशभक्ति की आग न लगा पाते चौधरी छाजूराम लाम्बा न होते तो सुभाष चन्द्र बोस आजाद हिंद फौज को सुचारू रूप से नहीं चला पाते चौधरी छाजूराम लाम्बा न होते तो महात्मा गांधी अंग्रेजो के खिलाफ जनमानस की आवाज न उठा पाते।

चौधरी छाजूराम के बड़े पुत्र सज्जन कुमार बहुत ही होनहार थे। वह चौधरी साहब का व्यापार संभालने में भी माहिर थे, लेकिन 27 सितंबर 1937 को जब उनकी अकस्मात मौत हुई तो इस हादसे ने चौधरी साहब को अंदर से तोड़ दिया। और फिर 7 अप्रैल 1943 को चौधरी साहब लंबी बीमारी के कारण दुनिया को छोड़ के चले गए।आज चौधरी साहब की जयंती है।

अपनी युवा पीढ़ी को पुरखो से अवगत कराएं। आज समाज को सेठ छाजूराम लाम्बा जी जैसे दानवीरों की जरूरत है।

दीन बंधु चौधरी छोटू राम

– सीमा ढिल्लों, गांव–मडलौडा, जिला–पानीपत

दीन बंधु चौधरी छोटू राम

खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले
खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है?

जी हां खुद पर यकीन करने वाले। मेहनत पर भरोसा रखने वाले और कमेरे वर्ग को जगाने वाले जिन्होंने लोगों को भाग्य के भरोसे बैठे रहने की बजाय कर्म करने की शिक्षा दी। जिन्होंने गुलाम देश में आजाद ख्यालों के साथ जीने की मिसाल कायम की। जो किसानों के मसीहा दीन हीन के बंधु बनकर उभरे। हम बातकर रहे हैं राम रिछपाल की जिन्हें दुनिया दीनबंधु सर छोटू राम के नाम से जानती है। दीनबंधु सर छोटू रामजी का जन्म 24 नवंबर 1881 को रोहतक के पास गढ़ी सांपला गांव के गरीब किसान के घर हुआ। बालक राम रिछपाल को स्कूल में भर्ती थोड़ा देर से किया गया। लेकिन स्कूल में जाने के बाद पढ़ाई में बहुत होशियार इस बालक की प्रतिभा देखकर सब हैरान थे। उन्होंने झज्जर के सरकारी स्कूल से मिडिल तक की शिक्षा प्राप्त की। घर की आर्थिक स्थिति कमजोर थी लेकिन बालक की आगे पढ़ने की रुचि और जिद कोदेखते हुए पिता उन्हे अपने साथ लेकर साहूकार महाजन के पास कर्जा लेने गए। तो साहूकार ने किसान पुत्र की पढ़ाई की रुचि का मजाक उड़ाते हुए, उन्हें अपने लिए पंखा हिलाने का इशारा किया। बालक छोटू रामने पिता के इस अपमान के पीछे का असल कारण उनकी आर्थिक गुलामी को समझने में देर ना की। और यहीं से उनके मन मे ये सोच पैदा हुई कि इस वर्ग को राजनीतिक आजादी से पहले आर्थिक आजादी की जरूरत है। आगे की पढ़ाई के लिए चाचा की मदद से क्रिश्चियन स्कूल में दाखिला हो गया। यहीं पर इन्होंने अन्याय के खिलाफ पहली बार आवाज भी उठाई। हॉस्टल में साफ सफाई खाने जैसी बेसिक चीजों के लिए हड़ताल करवा कर यह छात्रों के नेता बने। इस घटना से वह एकजुट होकर लड़ने और जीतने का सबक सीख चुके थे। इंटरमीडिएट के बाद घर पर पैसे की तंगी के कारण आगे की पढ़ाई का रास्ता लगभग बंद था। लेकिन सौभाग्य से रेल में सेठ छाज्जूराम से मुलाकात उनकी लाइफ का टर्निंग पॉइंट बन गई। इसके बाद तो इन्होंने सेठ छाज्जूराम जी की सहायता से सेंट स्टीफन कॉलेज मे ग्रेजुएशन तो आगरा कॉलेज से लॉ की डिग्रीपुरी की। इसी बीच राजा रामपाल के लिए हिंदुस्तान न्यूज पेपर का संपादन भी किया। लॉ की पढ़ाई पूरी होने के तुरंत बाद। इन्होंने प्रैक्टिस शुरू कर दी। वकालत के जरिए छोटू राम सच्चाई के लिए लड़ तो रहे थे, लेकिन उन्हें लग रहा थाकि किसान और कमेरे वर्ग के हक की लड़ाई के लिए सिर्फ वकालत काफी नहीं है। इसलिए वे सक्रिय राजनीति में कूद पड़े। और जाट सभा का गठन किया और जाट गजट नामक पत्र का प्रकाशन कर उसमें किसान और कमेरे वर्ग को जागृत करने के लिए बेचारा जमींदार नाम से श्रृंखला पर उल्लेख लिखें। उनके लिए इन लेखो के मूल भावनाओं ने लोगों को काफी प्रभावित किया। तभी से यह वर्ग उनसे भावनात्मक रूप से जुड़ने लगा। वो राजनीतिक पारी की शुरुआत में ही

रोहतक से कांग्रेस के प्रथम जिला अध्यक्ष बने। लेकिन 1920 में असहयोग आंदोलन में असहमत होने के चलते कांग्रेस को अलविदा कहकर पूरे पंजाब सुबे में साहूकारों के शोषण नौकरशाही के दमन और आर्थिक पिछड़ेपन से ग्रामीण जनता को मुक्ति दिलाने के लिए मिया सर फजले हुसैन और अन्य साथियों के साथ मिलकर यूनियनिस्ट पार्टी का गठन किया। उनकी लोकप्रियता का ये असर रहा की 1922 से लेकर 1946 तक। ये पार्टी तत्कालीन पंजाब में सत्तासीन रही। छोटू राम जी ने लगभग 25 साल सत्ता में रहते हुए किसानों और मजदूरोंको सूदखोरों के चंगुल से मुक्त करा आर्थिक आजादी दिलाने में कामयाबी पाई और उनके हितों की रक्षा केलिए अन्य कानून बनवाए। असल में ये कानून ही थे जिससे किसान, गरीब, मजदूर और मेहनतकश जनता को अपनी मेहनत का फल मिलने लगा। जिससे किसान को जमीन का मालिकाना हक मिला। यहां तक कि फसलों की समर्थन मूल्य के लिए चौधरी छोटू राम ने अंग्रेजों से सीधी टक्कर ली, ये उन दिनों की बात है।जब 1942 के विश्व युद्ध के दौरान अंग्रेजी सरकार देश में अन्न की कमी बताकर गेहूं को 6 रुपये प्रति मण खरीदना चाहती थी। तब छोटू राम जी ने बतौर कृषि मंत्री अपने किसानों के हक की बात रखते हुए इतने कम दाम पर गेहूं देने से साफ इनकार कर 10 रुपये प्रति मण की शर्त रखते हुए कहा, जिस खेत से दहकां कोमयसर ना हो रोटी उस खेत के हर गोशा ए, गदुंम को जला दो। चौधरी साहब के कठोर रुख, दृढ़ निश्चय और उनकी लोकप्रियता को भांपते हुए अंग्रेजी हुकूमत ने झुकना मुनासिब समझा और 11 रुपये मण के हिसाबसे गेहूं का समर्थन मूल्य स्वी.त करते हुए चौधरी साहब का लोहा मान लिया। छोटू राम जी को समाज परिवर्तन एवं किसान और कमेरे वर्ग के हितों की लड़ाई को कानून के द्वारा ओर जग चेतना जागते हुए प्रजातांत्रिक तरीके से रक्त विहीन सफल क्रांति करने का श्रेय भी जाता है। चौधरी छोटू राम सिर्फ किसानों के मसीहा नहीं थे बल्कि समाज के हर कमजोर दबे कुचले तबके के दुख दर्द को महसूस करते थे। अपने इसमिशन मे उन्होंने दलितों, गरीबों दीनहीनो और पशुपालकों के हितों की रक्षा के कानून बनवाने के साथ–साथ महिलाओं के सम्मान व उन्हें समानता का अधिकार दिलाने के लिए जेंडर इक्विटी एक्ट 1942 बनवाया।

खेती के साथ–साथ वो उद्योग और आधुनिकता के भी पक्ष में थे। उत्तर भारत खासकर सयुंक्त पंजाब में उद्योगिक क्रांति लाने का श्रेय चौधरी साहब को ही जाता है। वे चाहे पंजाब में उद्योग विभाग की शुरुआत करने की बात हो। या उद्योगपतियो की सहायता के लिए पंजाब वित्त मंडल का विकास या फिर होजरीउद्योग पानीपत में उनकी सफाई धुलाई का पहला उद्योग, हिसार टेक्सटाइल मिल की स्थापना जम्मू में रेशम के कीड़े पालने के उद्योग, अमृतसर में कंबल बनाने के उद्योग हो। यह सब उनके प्रयासों से ही संभव हो सका। चौधरी छोटू राम एक प्रतिष्ठीत अभिव्यक्ता, प्रखरवक्ता, प्रभावशाली लेखक, दूरदर्शी और जुझारू नेता थे। उन्होंने समाज से ऊंच–नीच, जात–पात छुआछूत जैसी बुराइयों को खत्म करने की कोशिश के साथ–साथ समाज में सर्व धर्म भाईचारे को बढ़ावा दिया। इसलिए उस समय का मुस्लिम समाज भी उनसे भावनात्मक रूप से जुड़ा हुआ था। उन्होंने तत्कालीन पंजाब में सांप्रदायिक ताकतो को नहीं उभरने दिया। येउनकी लोकप्रियता का ही असर रहा कि उनके समय काल में जिन्नाह और उनकी मुस्लिम लीग पंजाब में लगभग बेअसर रही। वो अखंड भारत के प्रबल समर्थक थे और भारत का विभाजन नहीं चाहते थे। इसके लिए उन्होंने 1943 में गांधी जी को एक चिट्ठी भी लिखी थी। गीता के कर्म सिद्धांत में गहन विश्वास रखने वालेछोटू राम जी अपने कार्यों से हिंदुओं के दीनबंधु, मुसलमानों के रहबरे आजम, किसानों के रहनुमा और गरीबों के छोटा राम कहलाए।

वे एक दूरदर्शी नेता थेऔर शिक्षा को ग्रामीण जनता के हालात बदलने के लिए वह जरूरी मानते थे। इसलिए उन्होंने ग्रामीण युवको को शिक्षा प्राप्त कर सामाजिक बदलाव हेतु समाज और शासन में प्रमुख दायित्वों पर प्रतिष्ठीत होने के लिए प्रेरित करते हुए किसान पुत्र छात्रवृत्ति की शुरुआत की। उन दिनों किसान की खेती और किस्मत प्राकृतिक वर्ष पर निर्भर थी। इसलिए हरित क्रांति की सोच लेकर 12 महीने खेती के लिए बड़ी नदियों पर बांध बनाकर नहरो के द्वारा पानी उपलब्ध करवाने के लिए भाखड़ा नांगल डैम की मूल परिकल्पना उन्होंने ही की थी। और बतौर मंत्री 8 जनवरी 1945 को पूरी रात भाखड़ा नांगल डैम की फाईल्स पर दस्तक कर, 9 जनवरी 1945 की सुबह अंतिम सांस ली। आज पंजाब, हरियाणा और उत्तर राजस्थान के खेतों में साल भर लहलहाती हरियाली उन्हीं की देन है। अपनी लगन मेहनत कार्यों और दूरदर्शी सोच से वो एक अमर इतिहास और एक ऐसा मार्ग आने वाली पीढियां के लिए छोड़ कर गए। जिसका एक हिस्से का भी अनुसरण किया जाए तो पूरी मानवता का कल्याण हो जाए। एसे शख्स बिरले ही पैदा होते हैं।

अतुलनीय व्यक्तित्वः जन नायक चौधरी देवीलाल

– डॉ. रणपाल सिंह, कुलपति

भारतीय राजनीतिक पटल पर अल्पमात्र व्यक्तित्व ही ऐसे हुए हैं, जिन्हें उनके राजनैतिक जीवन के पश्चात भी जनमानस ने आदर और सम्मान की दृष्टि से देखा है, जिनकी चर्चाएं हुई और जिन के कार्यों को सर्वथा सराहना मिलीं। हरियाणा की रत्न प्रसविनी धरा से ऐसी ही एक महान आत्मा का जन्म हुआ, जिनके कार्यों को जन जन ने सराहा, जिनके सद कृत्यों की सर्वथा चर्चाएं हुई और आज तक होती हैं और जो आज भी सर्वप्रिय, जनमानस के चहेते कद्दावर नेता हैं। यह महान नेता कोई और नहीं, अपितु हरदिल अजीज, भारतीय राजनैतिक आकाश का एक चमकता सितारा, हरियाणा का लाल चौधरी देवीलाल हैं। भारतीय राजनीति के दक्ष पुरोधा, निष्ठावान राजनीतिज्ञ, सर्व हितैषी, किसानों के मसीहा महान स्वतंत्रता सेनानी, हरियाणा के जन्मदाता, राजनीति के भीष्म पितामह, जबान के पक्के, हृदय से सच्चे परम दूरदर्शी समझ रखने वाले ताऊ चौधरी देवीलाल जी का जन्म 25 सितम्बर 1914 को पंजाब प्रोविंस (वर्तमान में हरियाणा के सिरसा जिले) में एक किसान परिवार में पिता चौधरी लेखराम जी के घर माता श्रीमती शुंगा देवी की कोख से हुआ। माता–पिता की लाडली संतान के रूप में बालक देवीलाल ने बाल्यकाल में सभी का स्नेह एवं प्रेम भरपूर बटोरा। चौधरी देवीलाल जी की पैतृक जड़ें राजस्थान के बीकानेर से जुड़ीं हुई थीं, जहां से उनके परदादा तेजराम चले गए थे। 1919 में जब देवीलाल 5 वर्ष के थे, तब उनके पिता श्री लेखराम जी तात्कालिक स्थितियों से चौटाला गांव में आ गए। बालकरूप में देवीलाल का जीवन चौटाला गांव की रज में पोषित होता रहा। होनहार बालक देवीलाल अपनी शिक्षा की दसवीं जमात भी पूरी नहीं कर पाए। जब वे दसवीं कक्षा में थे, तभी उन्होंने पढाई छोड़ दी। पढ़ाई से मुहं मोड़ने का कारण कुछ अन्य नहीं अपितु उनका राष्ट्र प्रेम और राजनीति से लगाव था। वे अपनी पढ़ाई छोड़ 1929 से ही राष्ट्रीय एवं राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने लगे। यह वह समय था, जब भारतवर्ष का स्वतंत्रता आन्दोलन अपने चरम पर था। उसी समय कांग्रेस लाहौर अधिवेशन हुआ और इस 15 वर्ष के बालक ने सच्चे स्वयं सेवक के रूप में इस अधिवेशन में भाग लिया। फिर सन् 1930 में गांधी जी से प्रभावित होकर स्वामी केशवानन्द द्वारा बनाई गई नमक की पुड़िया खरीदी, जिसका विरोध उन्हें उस समय की सरकार की प्रताड़ना द्वारा झेलना पड़ा। ताऊ न केवल महात्मा गांधी जी से बल्कि अपने बाल्यकाल में लाला लाजपत राय एवम् शहीद आजम भगतसिंह के जीवन से भी अत्यंत अनुप्रेरित थे। राष्ट्रीय प्रेम से भरे उत्साहित युवक देवालाल ने स्वतंत्रा के लिए संघर्ष कर अपनी राष्ट्रीय वैचारिकी का परिचय दिया। देवी लाल की राजनीतिक जीवनी लिख चुके और आधुनिक भारतीय इतिहासकार के०सी० यादव बताते है देवीलाल खुद बहुत सम्पन्न परिवार के थे। 1930 से राजनीति में सक्रिय हो गये थे, लेकिन उनका अन्दाज ठेठ ग्रामीण वाला था। वे दिल्ली के पावर कोरिडोर में खेतिहर मजदूरों और गरीब गुरबों की सबसे बड़ी उम्मीद थे। देश का अभिजात्य तबका उनको दबंग और लठैत नेता की तरह ही देखता रहा।

सच्चे समाजवादी एवम् गांधीवादीः वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था में ऐसे नेता की कल्पना करना मुश्किल है कि भारत में कोई ऐसा नेता भी रहा होगा, जो बहुमत के बल पर सर्वसम्मति से संसदीय दल का नेता मान लिया जाए, उसके पश्चात् भी वह अपनी जगह किसी दूसरे को प्रधानमंत्री बना दे। चौधरी देवी लाल 15 वर्ष की बाल्यकाल अवस्था में ही अंग्रेजों की गुलामी से देश को मुक्त करवाने के जुनून में अपने घरवालों को बिना बताए घर छोड़कर स्वतत्रंता आन्दोलन में कूदने वाले साहसी, पराक्रमी एवं निर्भीक देवीलाल मानवता के पुजारी बन अन्याय एवं अत्याचार का मुकाबला करने के लिए सदैव तैयार रहते थे। शोषितों के हितैषी और शोषकों के विरोधी ताऊ देवीलाल शोषण के खिलाफ जोरदार आवाज उठाने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। इसे ही ताऊ "न्याय युद्ध" कहते थे। किसी भी दृष्टिकोण से देखें तो देवीलाल जी का जीवन एक खुली किताब था। खुले जीवन की भांति आपका व्यक्तित्व और हृदय सबके लिए विशाल रहा। आप सच्चे अर्थ में गांधीवादी थे, ग्राम स्वराज एवं पंचायती राजव्यवस्था में आपका विश्वास अटूट था। गांधी जी के ग्राम स्वराज की अवधारणा को आप मूर्त रूप देना चाहते थे, इसके लिए सदैव प्रयासरत भी रहे। सदैव अत्यंत व्यावहारिक रहे चौधरी साहब अपनी लड़ाई वातानुकूलित महलों में बैठकर नहीं लड़ते थे। गांव–गांव चौपालों तक उनकी सीधी पहुँच थीं। दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी पर अंग्रेजों का अत्याचार, अब्राहम लिंकन का युवा अवस्था में दासों के साथ पशुवत व्यवहार एवम् सर छोटू राम द्वारा उनके पिता सुखीराम के साथ सांपला गांव में साहूकार का अपमानजनक व्यवहार आदि अनेकों घटनाओं का ही प्रभाव था कि चौधरी देवी लाल ने दीन–हीन निर्धन गरीबों के ऋणों को माफ करने की प्रतिज्ञा ली और प्रदेश के मुख्यमंत्री बनते ही सभी का ऋणों का माफ कर उस प्रतिज्ञा को प्राणपन से निभाया।

सच्चे देशभक्त एवं स्वतंत्रता सेनानीः देश भक्ति एवम् स्वतंत्रता की भावना देवी लाल जी में कूट–कूट कर भरी हुई थी। देवी लाल के जन्म का समय वह समय था जब सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्वतंत्रता की ज्वाला धधक रही थी। समाचार पत्रों में देशभक्तों एव मतवालों के किस्से मुख्य पृष्ठ पर सुर्खियों में छपते थे। महात्मा गांधी, लाला लाजपत राय, सरदार भगत सिह, राजगुरु और सुखदेव जैसे अनेकों स्वतंत्रता सेनानियों से प्रेरित होकर चौधरी देवीलाल देश की सेवा की ओर आकर्षित होने लगे। 1927 में जब साइमन कमीशन भारत आया, तब कांग्रेस में इसका पूर्ण बहिष्कार किया 13–14 वर्ष का यह बालक भी अपने आप से इसे अछूता नहीं रख पाया और अपने मित्र बलबीर के साथ दिसम्बर 1929 में लाहौर में कांग्रेस के अधिवेशन में शामिल हुआ। इसी कारण उन्हें छात्रावास से निकाला गया और माफी मांगने की शर्त रखी गई। देवी लाल जिद पर अड़े रहे और बिना परीक्षा दिये ही स्कूल छोड़ दिया और पूर्ण रूप से स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद गये। जेहलम पुलिस द्वारा शान्तिपूर्वक जूलुस निकालते समय स्वयं सेवकों

पर निर्दयता से लाठिया बरसाई गई इसके विरोध में सत्याग्रह हुए 'चौटाला' गांव में इसका संचालन चौधरी देवी लाल कर रहे थे। इसी कारण 28 अगस्त 1930 में 16 वर्ष के बालक को गिरतार कर जेल भेज दिया गया। इसी काल में उन्हें दुर्गादास खन्ना, भगत सिंह एवम् हरिकृष्ण जैसे महान देश भक्तों व क्रान्तिकारियों से मिलने का अवसर मिला। 5 मार्च 1931 गांधी इर्विन समझौते के अन्तर्गत राजनीतिक कैदियों के साथ देवी लाल जेल से रिहा हुए। गांधी जी के सहायक के रूप में अंग्रेजों के खिलाफ आन्दोलन करने के कारण 1932 में उन्हें पुनः गिरतार कर जेल भेज दिया गया। जेल के अन्धकारपूर्ण सीलन भरे 3 वातावरण से निकल करमनस्वी, जेल के अस्वास्थ्य भोजन से बिगड़े स्वास्थ्य को सुधारनेके लिए तथा पुनः शक्ति प्राप्त करने के लिए कुश्ती का अभ्यास प्रारम्भ किया। जिससे बहुत से पहलवानों को अपना अनुयायी बना लिया, जो आगे चलकर उनकी राजनीतिक गतिविधियों को सफल करने में सहायक सिद्ध हुए। 3 अप्रैल 1938 में हिसार आयोजित जिला कांग्रेस कमेटी के अधिविशन में देवीलाल को उपसचिव चुना गया। अखिल भारतीय कांग्रेस के अध्यक्ष सुभाष चन्द्र बोस नवम्बर 1938 में हिसार आए। आपने संकट के उस समय में अकाल पीड़ित मनुष्यों तथा पशुओं की सहायता करने की प्रार्थना की, चूँकि इस समय पंजाब प्रान्त में पीने के पानी की व्यवस्था नहीं थी। लोग पीने में पानी के लिए एक गांव से दूसरे गांव भटक रहे थे। उस समय भी देवी लाल सीता राम बागला की अध्यक्षता में 'सिरसा' तहसील तहत कमेटी के साथ अकाल पीड़ितों की सहायता में लग गये जिससे उनका यश सोरभ चारों ओर फैल गया। इसी प्रकार अनेकों बार जेल जाते रहने एवम् क्रान्तिकारी गतिविधियों में सम्मलित होते रहने के कारण देवीलाल के पिता पुत्र की शिकायत सुनते–2 परेशान हो गए। तब उन्हें अपने पुत्र की एवम् अपने गिरते स्वास्थ्य की चिन्ता सताने लगी। किसी ने उन्हें बताया कि सरकार ने देवीलाल को देखते ही गोली मारने के आदेश दिये थे। तब पिता ने उन्हें आत्मसमर्पण के लिए बामुश्किल मनाया, जिसमें देवीलाल ने शर्त रखी कि पहले चौटाला गांव के लोगों को सम्बोधित करेंगे तत्पश्चात् देवी लाल, लेखाराम कुम्हार, गणेशराम, हुक्मा, माइन, राम लाल बिश्नोई सहित 5 अक्टूबर 1942 को अपनी गिरतारी दी। मुल्तान जेल में 26 जनवरी 1943 को राजनैतिक कैदियों ने स्वंत्रता दिवस मनाने का निश्चय किया। देवीलाल ने एक सफेद धोती फाड़कर रसोई से हल्दी तथा मैदान में लगे शीशम के पेड़ से पत्तिया लेकर केसरिया और हरा रंग बनाकर तिरंगा झण्डा तैयार किया। जिसे उर्दू अखबार 'मिलाप' के सम्पादक यशपाल ने पेड़ पर फहराया इस घटना से क्षुब्ध होकर लाठी चार्ज किया गया। तब देवीलाल ने निडरता से कहा "लाठी चार्ज बन्द करो मानवता का परिचय दो। यदि झण्डा फहराना अपराध है तो हमारे विरूद्ध न्यायालय में अभियोग चलाओ।" ऐसे थे चौधरी देवीलाल, जिन्होंने आजादी के लिए बहुत कष्ट सहे। इन्हे ब्रिटिश सरकार ने पांच बार जेल भेजा। परन्तु सच्चे देशभक्त ताऊ देवीलाल के चेहरे पर, शिकन तक नहीं थी बल्कि इसे वे गर्व की बात समझते थे।

कृषक आन्दोलन एवम् देवीलालः हरियाणवी समाज का मूल स्वरूप ग्रामीण ही है। और मुख्य व्यवसाय कृषि ही रहा था। मुगलकाल में बादशाह मनमाने ढंग से भूराजस्व वसूलते थे इसके पश्चात् आये अंग्रेज काल में भी भूराजस्व प्रणाली में ना काफी सुधार ही हुए। किसान भूमि को गिरवी रखकर या बेचकर साहुकार के ऋणजाल में फंसाया जाता था। इसी को ध्यान में रखकर 1943 में जेल से छूटने के बाद 21 सदस्यों की "जूल व खदान सभा" बनाई। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद लगान मे बेतहाशा वृद्धि की गई तथा देवीलाल जी के ही कहने पर साहिबराम 4, 1945 में जवाहर लाल नेहरू से मिले। इसी समय देवीलाल जी 33 काश्तकारों के अनुबन्ध पत्र से भरे हैं, जिसमें बेगार प्रथा व घृणित ठप्पा जैसी अन्य प्रथाओं पर अंकुश लगाने का प्रावधान था तथा ढाका में मुजारों को जाग्रत करने के लिए किसान सम्मेलन किया जिसमें जमीदारी प्रथा का उन्मूलन करने के लिए प्रस्ताव पारित किये गए। 1946 में अबोहर में हुए किसान सम्मेलन में जमीदारों ने देवीलाल की हत्या करने का षडयंत्र किया। तथा देवीलाल पर जानलेवा हमला किया गया। देवीलाल इस अंजान प्रहार से हतप्रद थे और हिम्मत एवम् ताकत के बल पर अपनी प्राणों की रक्षा की। इस घटना के पश्चात् तो देवीलाल ने किसानों के हितों के लिए एक अनवरत् संघर्ष छेड़ दिया। जिसमें बडे–2 सम्मेलन, जैसे करनाल सम्मेलन, कसावला कृषक सम्मेलन, महाराष्ट्र कृषक सम्मेलन, सिरसा किसान आन्दोलन तथा दिल्ली किसान सम्मेलन सहित अनेकों सम्मेलन की अगवाई की एवम् भारत की पहली स्थायी कृषि नीति शरद जोशी की अध्यक्षता में गठित की गई। नौकरशाही के विरोध के पश्चात् देवीलाल जी की अध्यक्षता में नई प्रारूप समिति का गठन किया। चौधरी देवीलाल एक सच्चे किसान हितैषी, उनके मन की पीड़ा समझने वाले एवम् हर दुख–दर्द में उनके साथ रहने वाले कृषक हितों की रक्षा एक आदर्श नेता थे। चौधरी देवीलाल ने किसानों की आवाज को सड़क से लेकर संसद तक में प्राथमिकता से रखा, चाहे वह कृषि कानूनों की खिलाफत हो या फिर कृषक हित में बनाए जाने वाले नवीन कानून हो।

व्यवहरिक समाज सुधारकः चौधरी देवीलाल न केवल राजनीतिक क्षेत्र में दखल रखते थे वरन् उन्हें अपने समय के समाज सुधारक की श्रेणी में भी रखा जाता है। य।पि बड़े जमीदारों के पुत्र शराब आदि व्यसनों के बहुत अभ्यस्त होते थे किन्तु देवीलाल सत्त्वगुण सम्पन्न, पवित्रव्रती एवम् सदाचारी थे। उन्होंने सुरापन से सर्वदा स्वयं की रक्षा की। इतना ही नहीं 1930 में आपने लाहौर, अमृतसर में शराब की दुकान पर सत्याग्रही बन धरना दिया। 6 नवम्बर 1937 में जनसभा में गांवों से शराब के ठेके उठाने का प्रस्ताव पारित किया तथा 1977 में मुख्यमंत्री की शपथ ग्रहण के पश्चात् स्वामी अंग्निवेश, आदित्यवेश व मूलचन्द जैन आदि विधायकों के सुझाव पर विधानसभा में विधेयक पारित किया कि जो ग्राम सभा ठेके का विरोध करेगी, उस गांव में शराब का ठेका नहीं खुलेगा। शिक्षा के प्रसार के बारे में आपके विचार स्पष्ट थे। आप गांव के बच्चों को शिक्षा से वंचित नहीं रखना चाहते थे। देवी लाल जब विद्यार्थी ही थे तो अपने गांव में प्राथमिक विद्यालय को माध्यमिक नहीं करवा पाए थे। उसका इनके मन पर अमिट प्रभाव पड़ा। सरकार में आने पर आपने घोषणा की थी कि कोई गांव विद्यालय के लिए पैसा इकट्ठा करेगा तो उसे सरकार से बराबर अनुदान मिलेगा। शिक्षा प्रसार के क्षेत्र में ही आपने सिरसा जिले में राष्ट्रीय महाविद्यालय की स्थापना 1957 में करवाई। घुमन्तु परिवार

गाडिया लुहार के बच्चों को विद्यालय प्रत्येक दिन की उपस्थिति पर एक रूपया का अनुदान दिलवाया चूँकि आप उर्दू से लगाव रखते थे। आपने हरियाणा में "हरियाणा उर्दू अकादमी" बनवाई इतना ही नहीं जब आप उप–प्रधानमंत्री के रूप में एशियाई सम्मेलन में भाग लेने आस्ट्रेलिया गए तो वहां आपने अपना भाषण उर्दू भाषा में ही दिया। जिसकी प्रशंसा अनेक देशों के यात्रियों द्वारा भी की गई। समाज को दी गई अनेक सौगातों में ऋण माफी, वृद्धावस्था पेंशन एवम् स्वतंत्रता सेनानियों के लिए अनेक योजनाएं चलाई। शोषित वर्ग अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछडे वर्गों एवम् विमुक्त जातियों की दशा में सुधार लाने तथा जात–पात के बन्धन तोड़ने के अभिप्राय से मुख्यमंत्री देवीलाल ने उनके लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाई साथ ही घोषणा की यदि एक अनुसूचित जाति दूसरा पिछडा वर्ग तीसरा किसान तथा चौथा उच्च जाति का चारों मिलकर एक नवयुवक मण्डल बनाएं एक सोसायटी बनाए तो सरकार उसको काम प्रारम्भ करने के लिए आर्थिक मद्द भी दी। समाज को दी गई अनेक सौगातों में ऋण माफी, वृद्धावस्था पेंशन एवम् स्वतंत्रता सेनानियों के लिए अनेक योजनाएं चलाई। शोषित वर्ग अनुसूचित जाति, जनजाति, पिछडे वर्गों एवम् विमुक्त जातियों की दशा में सुधार लाने तथा जात–पात के बन्धन तोड़ने के अभिप्राय से मुख्यमंत्री देवीलाल ने उनके लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाई साथ ही घोषणा की यदि एक अनुसूचित जाति दूसरा पिछडा वर्ग तीसरा किसान तथा चौथा उच्च जाति का चारों मिलकर एक नवयुवक मण्डल बनाएं एक सोसायटी बनाए तो सरकार उसको काम प्रारम्भ करने के लिए आर्थिक मद्द भी दी।

भारतीय राजनीति मुख्यतः उत्तर भारत की राजनीति के वो चाणक्य माने जाते थे। अपनी जबान के पक्के, ईमानदार एवम् बेदाग छवि के राजनेता लोगों को अपने फैसलों से हतप्रभ कर देते थे। चाहे वो 1989 में अपने स्थान पर विश्वनाथ प्रताप सिंह को प्रधानमंत्री बना देना। हालांकि कुछ राजनीतिक विश्लेषक इसको उनके आत्मविश्वास में कमी मानते थे। जबकि देवीलाल कोकिसी प्रधानमंत्री पद का लालच ही नहीं था। नरेन्द्र मोदी सरकार में केन्द्रीय मंत्री रहे नामचीन पत्रकार एम०जे० अकबर ने देवीलाल के निधन पर लिखे स्मृति लेख में लिखा था दरअसल देवीलाल ये महसूस किया करते थे कि शहरी भारत का अभिजात्य वर्ग उन्हें स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। लिहाजा उन्होंने खुद को इस दौड़ से दूर कर लिया। देवीलाल की जीवनी लिख चुके भारतीय इतिहासकार प्रोफेसर के०सी० यादव बताते हैं यद्यपि देवीलाल बहुत सम्पन्न परिवार से थे। और 1930 से राजनीति में सक्रिय थे, परन्तु दिल्ली के पावर कोरिडोर में खेतिहर मजदूरों और गरीब गुरबा की सबसे बड़ी उम्मीद थे। देश का अभिजात्य तबका उनको दंबग और लठैत नेता की तरह ही दिखाता था। राजनीतिक दूरदर्शिता का अनुमान इससे ही लगाया जा सकता है कि 1987 में हरियाणा विधानसभा की 90 सीटों में से 85 पर जीत दर्ज कर कांग्रेस को महज 5 सीटों पर समेटने का कार्य चौधरी देवीलाल ने ही किया था। मुलायम सिंह यादव को मुख्यमंत्री बनाना हो या फिर लालू प्रसाद यादव को बिहार का मुख्यमंत्री बनवाना हो, वे सब रास्ते चौधरी देवीलाल जी की बैठक से निकलते थे। इस प्रकार जीवन भर गरीबों, मजदूरों, कामगारों व किसानों के हित की लड़ाई लड़ते–लड़ते हरियाणा के इस महान सपूत ने 6 अप्रैल 2001 को अपनी अंतिम सांस ली। जीवनयात्रा को सम्पन्नता पर उनका अन्तिम संस्कार दिल्ली में यमुना नदी के तट पर चौधरी चरण सिंह जी के समाधि स्थल किसान घाट केसानिध्य में संघर्ष स्थल पर हुआ। देश की रज में समाया यह देश की माटी का लाल सदा ही अपने सकर्मों के लिए सादर याद किया जाएगा। हरियाणा प्रांत का जनमानस ही नहीं, राष्ट्र उनका सदैव ऋणी रहेगा।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 30.08.95) 29/5'2.5" B.Sc. (Medical), M.Sc. (Botany), B.Ed. Father retired Head Draftsman. Mother housewife. Avoid Gotras: Dahiya, Dalal, Kajla. Cont.: 9996063910, 9896918002
- SM4 Jat Girl (DOB 07.01.92) 32/5'4" B.A. from Kurukshetra University. GNM from Pt. Bhagwat Dayal University Rohtak. Employed as Staff Nurse in Civil Hospital Sector 6, Panchkula on contract basis. Fathr retired Supervisor from HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house at Pinjore. Preferred match from Tri-city. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 14.10.94) 30/5'5" Major in Army Aviation (Pilot). Army background family. Preferred Army Officer Technical Arms/Services. Avoid Gotras: Barak, Kaliraman, Dagar. Cont.: 9464632638
- SM4 Jat Girl (DOB 22.06.97) 27/5'3" Employed as Nursing Officer in PGI Chandigarh on regular basis. Father's own business of Chemist. Mother house wife. Brother Sub Inspector in Chandigarh Police. Preferred suitable match with own house in Tricity or Chandigarh. Avoid Gotras: Bhanwala, Mor, Khatkar. Cont.: 9417579207
- SM4 Jat Girl (DOB 20.06.98) 26/5'5" B. Sc. Nursing. Employed as Nursing Officer in PGI Chandigarh on regular basis. Preferred suitable match in Government job. Family settled at Kaithal (Haryana). Avoid Gotras: Chahal, Sheokand, Moga. Cont.: 9468407521
- SM4 Jat Girl (DOB 29.11.94) 29/5'7" B.Sc. (I.T.) from Punjab University Chandigarh. Job: Cabin Crew in Indian Airlines. Father's own business of book shop. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Girl (DOB 18.08.98) 26/5'4" Master in Public Health from Edith Cowen University Australia. MBBS from K. D. Medial College Mathura, Agra. Father General Secretary, Haryana Wrestling Association and runs Education Society. Mother Government teacher. Avoid Gotras: Sangwan, Dhull, Dahiya, Rathee, Lather. Cont.: 9418413789, 9999038751
- SM4 Jat Girl (DOB (06.02.92) 32/5'3" M. A. B.Ed. Working as teacher in private school at Mohali (Punjab). Father retired Inspector from Chandigarh Police. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944, 7837908258
- SM4 Jat Girl (DOB (02.08. 2001) 23/5'1" B. A. (Hons. Economics) with Math. M.A. Economics. Computer Course of one year. Avoid Gotras: Dagar, Duhan, Suhag. Cont.: 9463586496
- SM4 Jat Girl (DOB (28.01.90) 34/5'3" Employed as Class-I Officer in Haryana Government with package of Rs. 29 Lalkh PA. Preferred match settled in Chandigarh, Panchkula. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sangwan, Dahiya, Khatri. Cont.: 8708116691
- SM4 Jat Girl (DOB 19.01.95) 29/5'2" A.N.M., G.N.M. (Nursing). Working in Alchemist Hospital Sector 21, Panchkula. Family settled at Dhakoli (Punjab). Avoid Gotras: Dhaka, Chauhan. Cont.: 9872111042
- SM4 Jat Girl (DOB 07.09. 97) 27/5'8" B. Tech. (CS) from YMCA Faridabad. Employed as Probationary Officer in State Bank of India since April, 2022. Pursuing for I.A.S. Father M. D. Cooperative Bank Fatehabad. Mother housewife (MA, B.Ed.) Avoid Gotras: Pattar, Moun, Goyat, Dhull, Punia. Cont.: 9467210303
- SM4 Jat Girl (DOB 11.02.98) 26/5'5". M. A. English from Punjab University Chandigarh. Steno English and Computer Diploma from HATRON.

Working in private job in Chandigarh. Father retired Superintendent from Haryana Government. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Preferred match in Tri-city. Avoid Gotras: Dahiya, Balyan, Jatrana. Cont.: 6239058052

- SM4 Jat Girl (DOB 08.08.96) 28/5'4" BSC (Non-Medical). M. A. English. Employed as Accountant (Non transferable) in the office of Principal Accountant General (A&E) Haryana, Chandigarh. Father employed in a reputed Fertilizer & Chemical Company. Mother housewife. Family settled at Kurukshetra (Haryana). Avoid Gotras: Sheokand, Goyat. Cont.: 8199998908
- SM4 (Divorced) Jat Girl 34/5'2" M.B.A. Pursuing PhD. Employed as Assistant Professor in Ch. Ranbir Singh Hooda University, Jind on contract basis. Father Chief Technical Officer retired from IIWBR, Karnal. Mother housewife. Family settled at Karnal. Preferred educated equally qualified match. Avoid Gotras: Dhillon, Kaindal, Jaglan. Cont.: 9416293593, 8307808611
- SM4 Jat Girl (DOB 04.03.98) 26/5'3" Lieutenant in Indian Army in EME branch. Posted in J & K area. Younger brother also Lieutenant in Indian Army. Father serving in Air Force. Mother Housewife. Avoid Gotras: Malik, Dhillon, Dangi. Cont.: 9541692438.
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950
- SM4 Jat Boy (DOB 09.09.97) 27/ 6feet. B. Tech (Computer Science). M.B.A. employed as Software Engineer in Rocket Software Pune with package Rs. 16 LPA (work from home). Father retired Supervisor form HMT Pinjore (Haryana). Mother housewife. Own house in Pinjore. . Own coaching institute at Pinjore with income of Rs. 31 lakh PA. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 9354839881
- SM4 Jat Boy (DOB 28.02.97) 27/5'7" B. Com. Pursuing M. Com. Employed as Junior Admin Assistant in PGI Chandigarh. Father Ex- Air force personnel, now employed in Haryana Civil Secretariat Chandigarh. Preferred match from Tri-city with Govt. job. Avoid Gotras: Mor, Kundu, Boora. Cont.: 8570878399
- SM4 Jat Boy (DOB 03.12.94) 29/6 feet. B. Tech. Doing private job with package of Rs. 5 LPA. Family settled at Sonepat. Avoid Gotras: Malik, Dahiya, Kaliraman, Behrman. Cont.: 7986151580
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 32/5'5". Graduate. Doing private job. Father retired from Government job. Mother in private job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 25.04.93) 31. B. Tech. Mechanical. Working as Assistant Manager (Marketing) in Jai Parvati Forge Ltd. Company. Income Rs. 6 Lac per year. Own house in Zirakpur (Punjab). Avoid Gotras: Nehra, Kadyan, Dhull. Cont.: 9876602035
- SM4 Jat Boy (DOB 29.04.91) 33/5'7". PhD submitted in Structural Engineering. Working as Guest Faculty DGRUST. Father Associate Professor of Physics in Jat College Rohtak. Mother School Principal. Preferred match in M.Sc./Chemistry/Math/Bio/Physics with NET. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Gill, Dahiya, Gehlawat. Cont.: 9416183949
- SM4 Jat Boy (DOB 10.01.96) 28/5'11". B. E. in Civil Engineering. Employed as Junior Engineer in Town & Country Planning, Haryana. Father employed in Transport Department, Haryana. Own flat in Peermuchhala (Punjab). Avoid Gotras: Kaliraman, Malik, Nain, Khatri. Cont.: 9780514690, 9780448601
- SM4 Jat Boy (DOB 06.11.98) 25/ 5'9" B. Com, Computer Diploma from HATRON. Own business of mobile repair. Own house in Panchkula. Avoid Gotras: Barak, Kadyan, Dalal. Cont.: 8146229865
- SM4 Divorced Jat Boy (DOB 25.02.91) 33'/6". Graduation from Punjab University Chandigarh. Father's own business of Book shop in Chandigarh. Mother housewife. Own house in Chandigarh. Young sister doing Job in Airline. Avoid Gotras: Pahal, Malik, Sehrawat. Cont.: 9988407607
- SM4 Jat Boy (DOB 02.04.96) 29/5'8". B.Tech, "Posted as Junior Engineer in Indian Railways. Family settled at Chandigarh. Mother working as Clark (Kushal Vibhag). Avoid Gotras: Bamal, Saharan, Nehra. Cont.: 8360237338
- SM4 Jat Boy (DOB 29.03.99) 25/5'8". Post Graduation. Employed in Indian Navy. Family settled at Panipat. Avoid Gotras: Ahlawat, Mor, Malik. Cont.: 9466701215
- SM4 Jat Boy (DOB 03.10.94) 30/5'11" B. Tech. Software Engineer. Income Rs. 17 LPA. Father Professor retired. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Tomar, Malik. Cont.: 9463742136
- SM4 Jat Boy (DOB 13.05.97) 27'/6". M. A. from Punjab University. Own business. Income Rs. 15000/- PM. Father retired from Chandigarh Police. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Jatain, Malik, Nandal. Cont.: 9417371824
- SM4 Jat Boy (DOB 22.02.96) 28/5'9" B. E. in Computer Science and Engineering. Master in Software Engineering from Canada in 2024. Now working as Senior Software Developer in Mobile Programme India Pvt. Ltd. Company with package of Rs. 18 LPA. Father Gazetted Officer in Electricity Department, Panchkula. Family settled at Manimajra (U.T.). Avoid Gotras: Sehrawat, Chahal, Dalal. Cont.: 9988763877
- SM4 Jat Boy (DOB 28.06.96) 28/ 6 feet. MCA. Working in IT at Chandigarh location. Income Rs. 14 LPA. Father Sub Inspector in Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sihag, Lather, Redhu, Khatkar. Cont.: 9417862853
- SM4 Jat Boy (DOB 24.10.96) 27/5'10" Plus two, Diploma in Electrician. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Bhanwala, Ruhal, Redhu. Cont.: 8053104615
- SM4 Jat Boy (DOB 10.01.96) 28/5'11" B. Tech. in Civil Engineering. Employed at Clerical Cadre post in Housing Board, Chandigarh on regular basis. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Kaliraman, Nain, Khatri, Malik. Cont.: 9780514690, 9780448601
- SM4 Jat Boy (DOB 02.01.95) 29/6'1" B. Tech. (IT), NMIMS Mumbai. Post Graduation in MBA (Marketing), NMIMS Mumbai. Worked at Aranca Global Research & Analytics Firms as Consultant at package Rs. 15 LPA. Currently working as a Freelance Project consultant and exploring new avenues to venture into. Father retired from HUDA, currently in construction business. Family income Rs. 70 LPA. Mother housewife. Avoid Gotras: Dalal, Gehlawat, Dhankhar. Cont.: 9910088655
- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.95) 29/5'9" B. Tech. in Mechanical Engineering. Working as SEO Specialist in Mohali with Rs. 5 LPA package. Father in Government job. Mother housewife. Own house at Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 7508929045, 9779132009
- SM4 Jat Boy (DOB 15.01.94) 30/ 6 feet. MBBS, M.D. in Medician. Only son. Father businessman. 20 acre agriculture land. Two Aahrat shops at Fatehabad. Preferred match of same profession. Avoid Gotras: Bharia, Saharan, Bhidaria. Cont.: 7015176069
- SM4 Jat Boy (DOB 07.07.98) 26/5'7" . M. D. final year from AIIMS Delhi in Radiation Oncology. Working as J. R. in AIIMS Delhi. Income Rs. 12 LPA. Father in Government job as a Building Inspector in Ulb department. Mother housewife. Preferred match M. D. Doctor or gazetted officer. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Dagar, Kadyan. Cont.: 9812645624
- SM4 Jat Boy (DOB 02.07.95) 29/5'11". B. com., M. Com. from Punjab University. Chartered Account in practice for last five years. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Dalal. Cont.: 7889059388
- SM4 Jat Boy (DOB 02.11. 2000) 23/6'1". B. Sc. Non-medical, M.Sc. Chemistry. Working as Manager in DCB Bank Hisar. 12 acre agriculture land. Avoid Gotras: Punia, Chahal, Beniwal. Cont.: 9217884178
- SM4 Jat Boy (DOB 02.10. 87) 36/5'2". Medical Engineer. Working in Mohali Rs. 15000/- PM. Avoid Gotras: Hooda, Malik. Cont.: 9915147487
- SM4 Jat Boy (DOB 18.10.90) 33/6'1". B. Tech. Employed as CBI Officer at Chandigarh. Father retired Under Secretary from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Preferred well qualified and working match. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal. Cont.: 9023492178, 7837551914
- SM4 Jat Boy 29/5'11". Working as Team Leader in Mohali with package of Rs. 6 lakh per year. Family settled at Zirakpur. Avoid Gotras: Naidu, Nain, Khatkar. Cont.: 9217126815, 9034837334

आर्थिक अनुदान की अपील

आवासीय परिसर

प्रिय साथियों, भाई–बहनों,

जाट सभा चण्डीगढ़ द्वारा गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान कटरा–जम्मु में जी.टी. रोड़ 10 पर चौ० छोटूराम यात्री निवास कटरा के विशाल भूस्थल पर अस्थाई तौर से रात्री विश्राम हेतु पांच कमरों का निर्माण किया जा चुका है और 11 केवी की क्षमता का ट्रांसफार्मर लगा दिया गया। यात्री निवास स्थल पर विकास एवं पंचायत विभाग कटरा द्वारा सरकारी खर्च से दो महिला व पुरूष शौचालय एवं स्नानघर का निर्माण पहले से किया जा चुका है। यात्री स्थल की लिंक रोड़ पर छोटी पुलिया का काम पूर्ण हो चुका है इस विशाल भवन प्रोजैक्ट पर अबतक प्लॉट की कीमत सहित लगभग एक करोड़ खर्च हो चुका है।

इस प्रस्तावित यात्री भवन में फैमिली सुट सहित 300 कमरे होगें। जिसमें मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पेंसरी, मैडीकल स्टोर, लाइब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगी। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगी। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, मूल निवासी गांव बीबीपुर, जिला जीन्द, वर्तमान निवासी मकान नं0 110, सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111 रुपये तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, मकान नं. 426–427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह, मकान न0 990, सैक्टर–3, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172-5086180, M-9877149580**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870, M-9467763337
Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।